इकाई 9 कोशों के प्रकार और अनुवाद में उपयोगिता

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 कोश : अर्थ और आयाम

9.3 कोशों की आवश्यकता और महत्व

9.4 अनुवाद में कोशों की उपयोगिता

9.5 कोशों के वर्ग

9.6 अनुवाद में एकभाषिक कोशों के उपयोग का औचित्य

9.7 अनुवाद में द्विभाषिक कोशों की उपयोगिता

9.8 विविध प्रकार के कोश : अनुवाद में उपयोगिता का संदर्भ

- 9.8.1 उपभाषा कोश/बोली कोश
- 9.8.2 अपभाषा/भदेस भाषा कोश
- 9.8.3 पारिभाषिक शब्द संग्रह/शब्दावली/कोश
- 9.8.4 परिभाषा कोश
- 9.8.5 समांतर कोश
- 9.8.6 पर्याय–विपर्याय कोश
- 9.8.6 व्यवहार कोश और अध्येता कोश
- 9.8.7 व्युत्पत्ति कोश
- 9.8.8 कथा कोश और पुराण/मिथक कोश
- 9.8.9 उद्धरण कोश/सूक्ति कोश
- 9.8.10 उच्चारण कोश
- 9.8.11 लोकोक्ति और मुहावरा कोश
- 9.8.12 साहित्य कोश
- 9.8.13 विश्व कोश
- 9.8.14 कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश

9.9 अनुवाद में कोशों के उपयोग की सीमाएँ

9.10 सारांश

9.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

9.12 उपयोगी पुस्तकें

9.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- कोश के अर्थ और स्वरूप को जान सकेंगे;

- कोशों की आवश्यकता और महत्व से परिचित हो सकेंगे, विशेष कर अनुवाद में;
- अनुवाद में एकभाषिक कोशों के उपयोग के औचित्य और द्विभाषिक कोशों की उपयोगिता से अवगत हो सकेंगे;
- अलग–अलग प्रकार के कोशों का अनुवाद के संदर्भ में महत्व एवं उपादेयता को रेखांकित कर सकेंगे; और
- अनुवाद के संदर्भ में कोशों की सीमाओं और समाधान पर विचार कर सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम कोशों के प्रकार और अनुवाद में उनकी उपयोगिता के बारे में पढ़ेंगे। इस संदर्भ में सबसे पहले कोश के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट किया गया है और यह बताया गया है कोशों की आवश्यकता और महत्व क्या है। अनुवाद में शब्दकोश और अन्य प्रकार के कोश अनुवादक के प्रमुख साधन सिद्ध होते हैं। चूँकि अनुवाद किसी एक भाषा के कथ्य का दूसरी भाषा में रूपांतरण है इसलिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा वाले शब्दकोशों की अनुवाद में उपादेयता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो अनुवाद में द्विभाषिक कोशों की जरूरत पड़ती है। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि अनुवाद में एकभाषिक कोशों के उपयोग का क्या औचित्य है? इस इकाई में इस प्रश्न पर भी विचार किया जा रहा है और यह बताया जा रहा है कि अनुवाद में एकभाषिक कोश किस प्रकार उपयोगी सिद्ध होते हैं। इसके साथ ही, इस इकाई में यह भी बताया जा रहा है कि विभिन्न प्रकार की सामग्री के अनुवाद में कौन–कौन से कोशों की कब और कहाँ आवश्यकता होती है। इकाई पढ़कर आपको यह भी पता चलेगा कि अनुवाद के संदर्भ में कोशों की सीमाएँ और समाधान क्या हैं। इस तरह प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आप प्रामाणिक अनुवाद में कोशों का महत्व और उनके सही प्रयोग को भली प्रकार से समझ सकेंगे। आइए सबसे पहले यह जानें कि अनुवाद में कोश से क्या अभिप्राय है? इसकी आवश्यकता और महत्व क्या है?

9.2 कोश : अर्थ और आयाम

आम बोलचाल में लोग 'शब्दकोश' के लिए 'कोश' शब्द का प्रयोग करते नजर आते हैं। प्राचीनकाल से ऋग्वेद, उपनिषद, पुराण आदि ग्रंथों में 'कोश' शब्द का कई बार प्रयोग किया गया है – कहीं 'कोश' के रूप में और कहीं 'कोश' के रूप में। यानी 'कोश' (मूर्धन्य 'श') एवं 'कोश' (तालव्य 'ष') दोनों वर्तनियों का प्रयोग होता आया है। लेकिन, प्राचीन संस्कृत कोशों में 'श' वर्ण की प्रधानता होते हुए भी आधुनिक शब्दकोश के लिए 'कोश' शब्द को और खजाना (अर्थात treasure) के लिए 'कोष' शब्द को प्रयुक्त करना उपयुक्त मानते हैं। बीसवीं सदी में हिंदी के मानकीकरण की प्रक्रिया में 'कोश' शब्द को 'शब्दकोश' के लिए तथा 'कोष' को 'खजाने' के लिए प्रयुक्त करना निर्धारित कर दिया गया।

'कोश' अथवा 'कोष' शब्द अपने इन दोनों ही रूपों में 'पीपा' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता था, जिसका अर्थ द्रव्य पदार्थ रखने का बर्तन। कालांतर में 'कटोरा', 'बाल्टी', 'म्यान', 'ढक्कन', 'खोल', 'संदूक', 'थैली', 'भंडार', 'शरीर', 'शब्दाादि संग्रह' आदि अनेक अर्थों में

प्रयुक्त होता रहा है। इस तरह देखा जाए तो 'कोश' शब्द का तात्पर्य किसी ऐसी वस्तु से है जिसमें कुछ रखा जा सके। इसी से 'कोश' शब्द विकसित होकर 'खज़ाना' (अर्थात रुपया, सोना, चाँदी आदि मूल्यवान वस्तुएँ आदि रखने का स्थान) तथा ग्रंथ विशेष के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें गाथाएँ, छंद आदि संकलित हों (बौद्ध और जैन साहित्य)। परिणामस्वरूप 'कोश' शब्द, ने उन ग्रंथों का पर्याय रूप धारण कर लिया जिनमें शब्दों का संग्रह, उनके अर्थ, उनके प्रयोग की पद्धति आदि का परिचय दिया गया हो। शब्दकोश के मूल अर्थ में भी यही भाव निहित है कि वह ग्रंथ है जिसमें शब्द एवं उनके विभिन्न अर्थ आदि हों।

परंपरा में 'कोश' के लिए विभिन्न शब्द–प्रयोग

अब तक दिए गए अध्ययन के आधार पर आपको यह स्पष्ट हो चुका होगा कि भारत में 'शब्दकोश' के अर्थ के संदर्भ में 'कोश' शब्द–प्रयोग करने की अवधारणा की उपस्थिति प्राचीनकाल से ही बनी ही है। 'कोश' में शब्दों के अर्थ/अर्थों, संदर्भों एवं प्रयोग संबंधी विवरण आम तौर पर वर्णक्रम के अनुसार संकलित होते हैं। उल्लेखनीय है कि प्राचीन वाड़मय में 'कोश' के संदर्भ में 'निघंटु' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है। इस शब्द–प्रयोग के संबंध में वस्तुस्थिति यह है कि द्रविड़ भाषा–परिवार की भारतीय भाषाओं और उनमें से भी विशेष तौर पर तमिल, मलयालम और तेलुगु भाषाओं में आज भी 'निघंटु' शब्द को व्यवहार में लाया जाता है। वहीं, संस्कृत में कोश के रूप में 'निरुक्त' भी मिलते हैं, जिनमें शब्दों के साथ उनकी निरुक्ति भी दी हुई होती है।

परंपरा में 'कोश के लिए 'निघंटु' और 'निरुक्त' के अलावा, संस्कृत के इस 'अभिधान' शब्द का अर्थ है – 'नाम'। ओडिया में 'कोश' शब्द के लिए आज भी 'अभिधान' शब्द प्रयुक्त किया जाता है। संस्कृत तथा उसी के अनुकरण पर हिंदी में 'कोश' के लिए 'अभिधानसंग्रह', 'अभिधानचिंतामणि', 'नाममाला', 'माला', 'शब्दमाला', 'शब्दरत्नमाला', 'शब्दार्थ कौस्तुभ', 'शब्दसिंधु', 'शब्दकल्पद्रुम', 'शब्दार्णव', 'शब्दरत्नसमुच्चय, 'शब्द सागर', 'शब्द पारिजातम्', 'शब्द संग्रह', 'शब्द चिंतामणि', 'शब्द रत्नाकर', 'शब्द मुक्तावली', 'शब्द मंजरी', 'नाम मंजरी', 'अनेकार्थमाला', 'वर्ण रत्नाकर' आदि व्यवहार में लाए गए हैं।

अंग्रेजी में 'कोश' के लिए पर्याय रूप में 'Dictionary', 'Lexicon', 'Glossary' और 'Thesaurus' शब्द प्रचलित हैं। इनमें से सर्वप्रथम 'Dictionary' शब्द मूलतः लैटिन शब्द diecere (डिसियर) का विकसित रूप है, जिसका अर्थ है – 'कहना' अथवा 'बोलना'। diecere से ही diction शब्द बना, जिसका अर्थ है – 'जो बोला या कहा जाए' अर्थात 'शब्द'। इसी diction शब्द से 'Dictionary' शब्द की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार, 'dictionary' को 'शब्दों का समूह या संग्रह' कहा जाता है।

'डिक्शनरी' शब्द के पर्याय के तौर पर 'Lexicon' को भी व्यवहार में लाया जाता है। 'Lexicography' और 'Lexicology' जैसे शब्द, इसी 'lexicon' से ही बनाए गए शब्द हैं। 'Lexicon' मूलतः यूनानी धातु 'Legein' से संबद्ध शब्द है। 'Legein' का अर्थ है – 'कहना' अथवा 'बोलना'। इसी से यूनानी शब्द 'Lexis' बना, जो 'शब्द' के लिए प्रयुक्त होता है। 'Lexis' से शब्दकोश का वाचक 'Lexikon' बना, जो 'Lexicon' शब्द के रूप में प्रयुक्त होता नजर आता है।

अंग्रेजी शब्द 'Glossary' को भी 'डिक्शनरी' (कोश) शब्द के पर्याय के तौर पर देखा

जाता है। 'Glossary' शब्द लैटिन शब्द glossarium से बना है, जिसका अर्थ है – 'ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों का संकलन।' यह ज्ञान के क्षेत्र विशेष के शब्दों का संकलन मात्र होता है, शब्दों के सामान्य अर्थ संकलित किए हुए होते हैं। इसीलिए ग्लॉसरी को 'शब्द–सूची' भी कहा जाता है। ये वास्तव में अंग्रेजी के विभिन्न प्रकार के कोशों में से एक प्रकार–विशेष का कोश है और इसे पारिभाषिक शब्दों के संकलन के तौर पर तैयार किया जाता है। भारत में इस प्रकार के शब्द–संग्रहों को भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के द्वारा तैयार किया जाता है। इनके बारे में आप इस इकाई में आगे अध्ययन करेंगे।

अंग्रेजी शब्द 'डिक्शनरी' (कोश) को कतिपय विद्वान 'Thesaurus' भी कह देते हैं। 'Thesaurus' शब्द यूनानी भाषा के 'thesaurus' से है, जिसका मूल अर्थ 'खजाना' अथवा 'भंडार' होता है। किंतु आजकल यह अंग्रेजी के विभिन्न प्रकार के कोशों में से एक प्रकार–विशेष के कोश को 'Thesaurus' कहा जाता है, जिसके लिए हिंदी में 'समांतर कोश' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इस इकाई के भाग 9.8 में 'कोशों के प्रकार' पर विचार करते समय कोश के इस प्रकार–विशेष पर भी चर्चा की जाएगी।

अगर हम 'कोश' के उर्दू पर्याय पर विचार करें तो हम यह पाते हैं कि अरबी–फारसी और उर्दू का 'लुग़त' शब्द, इसी 'कोश' का ही द्योतक है। 'लुगत' मूलतः अरबी का शब्द है तथा इसका 'माद्दा' (धातु) 'लाम–ग़ैन–ते' है, जिसका अर्थ है 'बोलना'। इसी आधार पर प्राचीन अरबी में 'लुग़त' का प्रयोग शब्द के लिए हुआ, और फिर 'शब्दों के संग्रह' को भी 'लुग़त' कहा जाने लगा।

कोश की परिभाषा

'कोश' को परिभाषित करना कोई सरल कार्य नहीं है क्योंकि कार्य और उपयोगिता की दृष्टि से उनका कार्य वर्तमान युग में बहुत व्यापक हो चुका है। वे केवल शब्दों के संग्रह मात्र न होकर, भाषा के विविध पक्षों एवं भाषेतर विषयों की ज्ञान–प्राप्ति का स्रोत तक बन चुके हैं। इसलिए कोश को 'संदर्भ ग्रंथ' भी कह दिया जाता है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका (Encyclopedia Britannica) में कोश को परिभाषित करते हुए यह उल्लेख मिलता है कि कोश एक ऐसी पुस्तक है जिसमें एक भाषा के शब्दों को उसी भाषा अथवा किसी अन्य भाषा में उनके अर्थों के साथ सामान्यतः उनके उच्चारण, व्युत्पत्ति, प्रयोग संबंधी जानकारी के साथ वर्ण–अनुक्रम में रखा जाता है – "Dictionary, a book listing words of a language, with their meaning in the same or another language usually in alphabetical order, often with date regarding pronounciation, origin and usage".

वहीं, 'शब्दकोश' को परिभाषित करते हुए 'विकीपीडिया' (Wikipedia) में यह कहा गया है कि 'कोश (जिसे शब्दकोश या शब्द–संग्रह भी कहा जाता है) मूलतः एक या एकाधिक भाषाओं के शब्दों का संग्रह है जिसमें शब्दों के प्रयोग की जानकारी, उनकी परिभाषाएँ, शब्द व्युत्पत्ति, स्वर विज्ञान, उच्चारण तथा अन्य सबंधित जानकारी दी जाती हैं। इनमें शब्दों का संग्रह प्रायः वर्णानुक्रम में दिया जाता है। अथवा वह ग्रंथ जिसमें एक भाषा के शब्दों के दूसरी भाषा में समतुल्य दिए जाएँ, वह भी शब्दकोश कहलाता है।' – 'A dictionary, also called a lexicon, wordbook, or vocabulary, is a collection of words in one or more specific languages, often listed alphabetically, with usage information, definitions, etymologies, phonetics, pronunciations, and

other information, or a book of words in one language with their equivalents in another, also known as a lexicon.'

'मानक हिंदी कोश' के अनुसार, शब्दकोश वह है 'जिसमें किसी विशेष क्रम से शब्द दिए हों व उनके आगे अर्थ दिए हों।' और हिंदी के प्रसिद्ध भाषाविद एवं कोशकार डॉ. भोलानाथ तिवारी का कहना है कि 'कोश ऐसे संदर्भ ग्रंथ को कहते हैं जिसमें भाषा–विशेष के शब्दादि का संग्रह हो, या संग्रह के साथ उनके इसी या दूसरी या दोनों भाषाओं में, अर्थ, पर्याय, प्रयोग या विलोम हों, या विशिष्ट अथवा विभिन्न विषयों की प्रविष्टियों की व्याख्या, नामों (स्थान, व्यक्ति आदि) का परिचय, या कथनों आदि का संकलन क्रमबद्ध रूप में हो।'

विभिन्न कोश के अर्थ–स्वरूप और विभिन्न परिभाषाओं में व्यक्त विचारों के आलोक में यह 'शब्दकोश' को परिभाषित करते हुए निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि 'शब्दकोश, शब्दों का वह संग्रह है जिसमें आवश्यकता के अनुसार एक भाषा के शब्दों का उसी भाषा में या फिर अन्य भाषा/भाषाओं में उनके प्रचलित एवं मानक रूप (वर्तनी), व्याकरणिक कोटि, व्युत्पत्ति और विकासक्रम, अर्थ, परिभाषा, उच्चारण, पर्याय, प्रयोग, विलोम, मुहावरे–लोकोक्तियाँ आदि संबंधी विविध जानकारियाँ उपयोगी एवं सार्थक क्रम के अनुसार दी हुई होती हैं।' भाषा–विशेष और उसके शब्दों के स्वरूप का ज्ञान–बोध कराने वाले इन आयामों के अलावा, वर्तमान युग में कोशों के कार्य–क्षेत्र का व्यापक विस्तार के कारण वे केवल शब्दों के संग्रह मात्र न रहकर, भाषा के विविध पक्षों एवं भाषेतर विषयों की ज्ञान–प्राप्ति का स्रोत तक बन चुके हैं। इसलिए कोश को 'संदर्भ ग्रंथ' भी कह दिया जाता है।

9.3 कोशों की आवश्यकता और महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए वह अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए 'भाषा' को माध्यम बनाता है। समाज के स्वरूप को भाषा के जरिए ही अवलोकित किया जा सकता है, निरखा–परखा जा सकता है। इसलिए कहा जाता है कि समाज और भाषा का पारस्परिक संबंध है। और अगर हम 'भाषा' की अवधारणा पर हम विचार करें तो यह कहा जाएगा कि 'शब्द' इसका आधार है और शब्द का आधार 'अर्थ'। इसे हम यों भी कह सकते हैं कि शब्द अगर शरीर है तो अर्थ उसकी आत्मा। प्रत्येक शब्द की अपनी स्वरूपगत पहचान होती है और अर्थ के धरातल पर वे किसी एक ही अर्थ को व्यक्त नहीं करते। वे शाब्दिक अर्थ (अर्थात अभिधार्थ/connotative meaning) का बोध तो कराते ही हैं, साथ ही वे निहितार्थ (denotative meaning) के भी द्योतक होते हैं। इसके अलावा, शब्दों के संदर्भपरक (referential) अर्थ एवं भावात्मक (emmotive) अर्थ भी होते हैं। शब्दों का 'भावात्मक अर्थ' शब्दों के व्यंजना–प्रधान प्रयोग से संबंधित है। शब्दों की सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों से संपृक्ति भी विचारणीय पक्ष होता है। इस तरह देखें तो शब्दों में निहित अर्थ, वास्तव में कई संदर्भों को व्यक्त करते हैं।

मनुष्य, शब्दों में निहित अर्थों के विभिन्न परतों को अपने मस्तिष्क पटल में संजोए रखता है और भाषा व्यवहार की व्यापकता से समय के साथ–साथ उसके शब्द–भंडार में वृद्धि होती चलती है। भाषा प्रयोग में वह मेधा अथवा स्मरण शक्ति उन शब्दों को व्यवहार में लाकर भावों को व्यक्त करता है। लेकिन मनुष्य की मेधा अथवा स्मरण शक्ति की भी

सीमा होती है। इसलिए शब्द विशेष के अर्थ–संदर्भों को जानने और समाज को परिचित कराने के लिए उनका संकलन आदि किया जाता है। शब्दों का यह संकलन हमें कोशों के रूप में प्राप्त होता है, जो शब्दों और उनके अर्थों आदि को एक सुगठित कलेवर एवं स्थायित्व प्रदान करता है। इसीलिए शब्दकोश को 'मानव स्मृति का एक साकार स्वरूप' कह दिया जाता है। वास्तव में कोश, मानव सभ्यता–समाज और संस्कृति के उद्‌भव, विकास और उत्कर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं, प्रतिबिंबित करते हैं।

शब्दों के संग्रह 'कोश' का मानव–जीवन में महत्व को शब्द की महत्ता के संदर्भ में देखा जाता है। शब्द को साक्षात 'ब्रह्म' कहा गया है। शब्द के बारे में पूर्ण अवबोध अर्थात विस्तृत जानकारी की दृष्टि से कोश महत्वपूर्ण साधन होते हैं। इस अवबोधन–जानकारी से मनुष्य के बौद्धिक ज्ञान में अभिवृद्धि होती है, वह परिपक्व होता है और उसका मानसिक विकास होता है। इस तरह कोश, मनुष्य की ज्ञान–पिपासा के शमन का प्रमुख साधन का रूप धारण कर लेता है। वास्तव में प्रत्येक शब्द की अपनी स्वरूपगत पहचान होती है और अर्थ के धरातल पर शाब्दिक, सांदर्भिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों आदि से संपृक्ति। कोश में शब्द के अर्थ का सांगोपांग विवेचन होता है, इसलिए जहाँ वह 'अज्ञात' को 'ज्ञात' बनाता है, वहीं 'अर्धज्ञात' को 'पूर्ण ज्ञात' बनाने का निमित्त भी बनता है। शब्दों के अभाव में कोई भी बौद्धिक कार्य संभव नहीं होता और यदि शब्दार्थ में अज्ञात पक्ष या अर्धज्ञात पक्ष बना रहे तो व्यक्ति को पूर्ण अर्थ ज्ञात नहीं पाएगा। अगर शब्दार्थ के धरातल पर गलतफहमी हो जाए या शब्दों का सही अर्थ ग्रहण न किया जाए तो वह अनर्थकारी तक सिद्ध हो जाता है। सी.के. ऑग्डेन और आई.ए. रिचर्ड्स की पुस्तक 'दि मीनिंग ऑफ मीनिंग' में तो यहाँ तक लिखा है कि गलतफहमी या शब्दों का ठीक अर्थ न समझना ही विश्व–व्यापी युद्धों का कारण रहा है। वास्तव में कोश, अर्थ का सम्यक उद्‌घाटन कर हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का साधन है।

कोश, भाषा–विशेष के स्वरूप का ज्ञान कराता है। कोश से हमें शब्दों के विविध अर्थों और संदर्भों आदि की नवीन जानकारी भी प्राप्त होती है। कोश जहाँ शब्दों की व्याकरणिक कोटियों की जानकारी प्रदान करने के महत्वपूर्ण साधन हैं, वहीं ये नवीन अभिव्यक्ति की सूचना उपलब्ध कराने का मुख्य स्रोत भी सिद्ध होते हैं। कोश, मानक वर्तनी और मानक उच्चारण के साथ–साथ भाषा संबंधी नवीन प्रयोगों आदि की अधुनातन जानकारी प्रदान करने वाले एकमात्र सहयोग उपकरण है। कोश, भाषा की व्याकरणिक इकाइयों और उसके उपयोग में समय–समय पर होने वाले परिवर्तनों की जानकारी का मुख्य स्रोत होते हैं। इससे भाषा में व्याकरण के धरातल पर व्यवस्था और शुद्धता–मानकता की स्थिति बनती है। इसलिए कहा जाता है कि कोश, भाषा में एकरूपता और मानकता बनाए रखने की दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं। कोशों की सहायता से भाषा को सही रूप में लिखने और बोलने में मदद मिलती है। भाषा के मानकीकरण में कोशों की भूमिका और योगदान का प्रमाण फ्रांसीसी, इतालवी, स्पेनी, रूसी अकादियों के कोशों तथा जॉनसन के प्रसिद्ध अंग्रेजी कोश हैं, जिन्होंने संबंधित भाषाओं में मानकीकरण में अतुलनीय भूमिका निभाई है।

वास्तविकता यह है कि भाषा के विकास के लिए जहाँ यह जरूरी है कि उसका आधुनिकीकरण हो, वहीं उसका मानकीकरण भी होना चाहिए। केवल एक ही गतिविधि को करने मात्र से भाषा का विकास नहीं हो सकता। इसलिए यह स्वीकार किया जाता है कि भाषा विकास में इन दोनों गतिविधियों की महत्वपूर्ण भूमिका एवं स्थान है। भाषा संबंधी इन दोनों गतिविधियों – आधुनिकीकरण और मानकीकरण – में कोशों का स्थान

विशिष्ट है। इसका मूलभूत कारण यह है कि कोश भाषा के क्षेत्र में हो रहे या किए जा रहे आधुनिकीकरण और मानकीकरण के संचयन एवं संरक्षण का उपयोगी तथा सार्थक साधन बनते हैं।

कोश, भाषा और साहित्य की समृद्धि के वे सूचक हैं जिनसे भाषा के विकास का बोध होता है। कोशों ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध बनाने में भाषिक कोश – भले ही वे एकभाषिक हों, द्विभाषिक या फिर बहुभाषिक, साहित्यिक कोश, पर्याय कोश, मुहावरा–लोकोक्ति कोश, कृति कोश, कृतिकार कोश, उपन्यास कोश, नाटक कोश, बोली कोश, ज्ञान कोश आदि विभिन्न प्रकार के कोशों का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा की समृद्धि के परिचायक कोश, भाषा विशेष के शब्द भंडार को विकसित करने का प्रमुख साधन हैं। इससे भाषा के साहित्य का विकास होता है। इस संदर्भ में भारतीय अनुवाद परिषद की त्रैमासिक पत्रिका 'अनुवाद' के अंक 99 में 'कोश विज्ञान : एक परिचय' शीर्षक से प्रकाशित डॉ. अचलानंद जखमोला के लेख का विशेष तौर पर उल्लेख किया जा सकता है। इसमें डॉ. जखमोला ने लिखा है कि 'किसी भी भाषा के शब्दकोश उसके साहित्य की सर्वांगीण उन्नति में वही स्थान रखते हैं जो किसी राज्य की उन्नति और विकास में उसका आर्थिक विभाग रखता है। जिस प्रकार किसी राज्य की सुदृढ़ता, उसके प्रत्येक विभाग की स्वास्थ्यपूर्ण प्रगति, शक्ति और आधार बहुत कुछ उसके आर्थिक कोश की अवस्था पर अवलंबित है, उसी प्रकार किसी भाषा का विकास और निर्माण, उसके समस्त अंगों की ताज़गी, सुडौलपन, स्थिरता और विस्तार बहुत कुछ उसके शब्द–भंडारों या शब्दकोशों पर निर्भर करता है।' (पृ.98) यही कारण है कि कोश न केवल भाषा की समृद्धि के परिचायक हैं, बल्कि साहित्य की समृद्धि के भी परिचायक हैं।

आज वैश्विक पटल पर ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में आश्चर्यजनक विकास और विस्तार हो रहा है। इस विकास ने भौगोलिक दूरियों को पाट कर रख दिया है। दुनिया के कमोबेश सभी देश–समाज परस्पर निकट आए हैं, उनमें मेल–मिलाप बढ़ा है। इस परस्पर निकटता के कारण शिक्षा, व्यापार, पर्यटन, आदि अनेकानेक क्षेत्रों में परस्पर व्यवहार में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई है। इस निकटता ने शब्दों के आदान–प्रदान को भी बढ़ा दिया है, जिससे प्रत्येक भाषा के शब्द–भंडार और परिणामतः कोशों के कलेवर में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हो रही है। इस अभिवृद्धि का एक अन्य आयाम विश्व–व्यापी युद्ध, शांति, कूटनीति, धार्मिक–आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में बढ़ोतरी भी है जो शब्द भंडार और कोशों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आधार हैं।

ज्ञान–विज्ञान से संबंधित शब्दावली के ज्ञानार्जन की दृष्टि से भी कोशों की उपादेयता है। नए–नए विचारों–अवधारणाओं के प्रतिपादन और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भौतिक उत्पाद रूपी नित नई खोजों–आविष्कारों आदि के कारण जो उन्नति और विकास हो रहा है उसे शब्दबद्ध करना बड़ा कठिन है। इस विकास को भाषायी विकास के संबंध में देखा जा सकता है। इस विकास का आयाम यह है कि नित नए शब्द–अवधारणाएँ विकसित हो रही हैं, नए–नए शब्द गढ़े जा रहे हैं, पुराने शब्दों में नए अर्थ संदर्भ जुड़ रहे हैं या उनके अर्थों में संकोच–विस्तार या परिवर्तन हो रहे हैं। कोश इन नवीन शब्द–अवधारणाओं और संदर्भों को लोगों तक पहुँचाने का स्रोत बन जाते हैं। मनुष्य अपने बौद्धिक–मानसिक स्तर को अपने युग के अनुरूप बनाने के लिए कोश का आश्रय ग्रहण करता है। कोश अपनी कतिपय सीमाओं में इन नित्यप्रति जुड़ने वाले नवीन तकनीकी शब्दों–अवधारणाओं को आत्मसात कर इनसे संबंधित ज्ञान के विपुल

एवं महत्वपूर्ण स्रोतों को उपलब्ध कराने का निमित्त अथवा साधन बनता है। इसलिए यह स्वीकार किया जाता है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी आदि ज्ञान–विज्ञान के विविध क्षेत्रों की अवधारणाओं आदि को व्यक्त करने वाले तकनीकी शब्दों के ज्ञानार्जन में कोशों की महत्वपूर्ण उपादेयता है।

कोश, विचार–शक्ति को व्यापकता प्रदान करते हैं। वे इसे संकुचित स्थिति से ऊपर उठाने का निमित्त बनते हैं, व्यष्टि से समष्टि की यात्रा का आधार बनते हैं। कोश, मानव सभ्यता–समाज और संस्कृति के उद्‌भव, विकास और अभिव्यक्ति प्रदान करने एवं प्रतिबिंबित करने के साथ–साथ उसका संरक्षण करने का भी सुदृढ़ माध्यम हैं। किसी भी भाषा–समाज में वैचारिक, सांस्कृतिक, व्याकरणिक और भाषायी धरातल पर विकास और विज्ञता लाने की दृष्टि से कोशों की देन अतुलनीय है। इन संदर्भों में समाज में व्याप्त खंडता का कोशों के कारण निराकरण होता है, एकता की भावना बलवती होती है और राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है। और अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो कोशों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एकता और अखंडता की स्थितियाँ बनना संभव हो पाता है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि मानव–मात्र के कल्याण के संदर्भ में कोश सार्थक भूमिका निभाते हैं इसलिए अतुलनीय रूप से प्रासंगिक हैं।

9.4 अनुवाद में कोशों की उपयोगिता

अनुवाद, एक भाषा के भाव–संवेदना आदि को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने की व्यावहारिक गतिविधि माना जाता है। इस गतिविधि को भली प्रकार से संपन्न करने के दौरान अनुवादक न केवल स्रोत भाषा पाठ के शाब्दिक भावों को लक्ष्य भाषा में तो व्यक्त करता ही है, साथ ही मूल में अंतर्निहित विचारों–भावनाओं आदि को दूसरी भाषा के सही–सही शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि अनूदित पाठ की गुणवत्ता ऐसी हो कि वह मूल पाठ की ही तरह सहज–स्वाभाविक प्रतीत हो।

अनुवाद की इस मूलभूत अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए अनुवादक का स्रोत एवं लक्ष्य अर्थात दोनों भाषाओं पर अच्छा नियंत्रण होना चाहिए। वहीं, उसे अनुवाद किए जाने वाली सामग्री से संबंधित विषय और उसकी पारिभाषिक शब्दावली का भी पर्याप्त ज्ञान होना जरूरी होता है। इसके अलावा, हमें यह भी ध्यान में रखकर चलना होगा कि भाषा केवल भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम मात्र नहीं है, उसमें उस भाषा–समाज की संस्कृति का संवहण भी होता है, जिसे अनुवादक को लक्ष्य भाषा की संस्कृति के सापेक्ष प्रस्तुत करने की चुनौती भी होती है। लेकिन, उसके समक्ष केवल यही चुनौती नहीं होती। चुनौतियों–समस्याओं के अन्य आयाम भी हैं। जैसे, हो सकता है अनुवादक को दोनों भाषाओं पर अच्छा नियंत्रण न हो। या फिर, वह लक्ष्य भाषा में समुचित समतुल्य शब्द न ढूँढ पाए। स्रोत भाषा पर अच्छी पकड़ न होने के कारण वह मूल सामग्री को गहराई से समझ पाने में विफल रह सकता है और वह लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल सहज रूप से कथ्य प्रस्तुत न कर पाए। ऐसा भी संभव है कि उसे स्रोत भाषा की ध्वनि व्यवस्था और किसी शब्द विशेष के सही–सही उच्चारण की उपयुक्त जानकारी न हो। ऐसी स्थिति में, स्रोत भाषा के शब्दों को लक्ष्य भाषा में सही तरीके से लिप्यंतरित करने की भी समस्या उठ खड़ी होती है। इसके अलावा, भाषा संबंधी समस्या जटिल वाक्य संरचना आदि से भी जुड़ी हुई हो सकती है, जिसकी वजह से वह मूल पाठ के वाक्य का सही अर्थ ग्रहण न कर पाए।

इस प्रकार की विभिन्न समस्याओं के अलावा यह भी संभावना हो सकती है कि अनुवादक को स्रोत भाषा के विषय–विशेष अथवा उसकी अंतर्वस्तु का समुचित ज्ञान न हो या उसे समझने में कठिनाई हो। वहीं, विषय से जुड़ी पारिभाषिक शब्दावली की भी समस्या हो सकती है कि वह उन शब्दों को गहनता से समझ ही न पाए। यह भी हो सकता है कि स्रोत भाषा पाठ में संक्षिप्ताक्षरों (abbreviations) का प्रयोग किया गया हो, जिनके पूरे रूप से वह परिचित न हो। ऐसे में उनका अनुवाद करने अथवा लक्ष्य भाषा के संक्षिप्ताक्षरों के रूप में प्रस्तुत करने में कठिनाई हो जाती है। अनूदित पाठ का पुनरीक्षण करके उसमें यथोचित संशोधन करने वाले पुनरीक्षक के समक्ष भी इसी प्रकार की चुनौतियाँ आ सकती हैं।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि स्रोत और लक्ष्य भाषा पर अपेक्षित अधिकार न होने और मूल विषय के ज्ञान से संबंधित अनुवादक के सामने उपस्थिति विभिन्न प्रकार की समस्याओं–चुनौतियों का सामना करने के लिए अनुवादक को क्या करना चाहिए? अनुवाद में अनुभव की जाने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझने के लिए अनुवादक की अपनी मेधा अथवा स्मरण–शक्ति की भी कोई न कोई सीमा होती है। इसलिए, उसे केवल स्मरण–शक्ति पर निर्भर न रहकर समाधान के विकल्प के रूप में यानी संदर्भ सामग्री के तौर पर विभिन्न साधन–उपकरणों की आवश्यकता भी पड़ जाती है। अनूद्य सामग्री के कथ्य के आलोक में उपयुक्त साधन–उपकरणों का समुचित उपयोग करके विभिन्न तरीकों एवं ढंगों से शब्दांतर एवं कथन के आशय को दूसरी भाषा में सही तरह से प्रस्तुत कर पाना संभव होता है। विषय एवं भाषा संबंधी ज्ञान के लिए ये विशेष साधन–उपकरण महत्वपूर्ण औजार सिद्ध होते हैं। इन उपकरणों में से सबसे अधिक सहायक सिद्ध होता है – शब्दकोश। इनके अतिरिक्त, पर्याय कोश, अभिव्यक्ति कोश, विषय कोश, बोली अथवा उपभाषा कोश, पुराण कोश, साहित्य कोश, लोकोक्ति–मुहावरा कोश, विश्व कोश आदि भी सहायक सिद्ध होते हैं। विभिन्न प्रकार के साधन–उपकरणों का उपयोग करने से अनुवादक को लक्ष्य भाषा में ऐसी अनूदित सामग्री प्रस्तुत करने में मदद मिलती है, जो उस भाषा के प्रयोक्ता वर्ग को सहज रूप से स्वीकार्य अथवा ग्राह्य हो।

किंतु जब अनुवादक किसी विषय–विशेष संबंधित अथवा उसपर केंद्रित सामग्री का अनुवाद करता है तो उसे उस ज्ञान–शाखा अथवा व्यवहार क्षेत्र के विशिष्ट अर्थों के व्यंजित विशिष्ट शब्दों एवं विशिष्ट प्रयुक्तियों के लक्ष्य भाषा में पर्याय खोजने पड़ते हैं। मानक भाषा के कोशों में विषय–विशेष से संबद्ध विशिष्ट तकनीकी शब्दावली एवं विशिष्ट प्रयुक्तियों का समावेश नहीं होता है। हालाँकि ज्ञान–शाखा अथवा व्यवहार क्षेत्र का जानकार व्यक्ति तत्संबंधी पारिभाषिक शब्दावली से कुछ हद तक परिचित होता है और वह अपनी मेधा अथवा स्मरण–शक्ति के आधार पर उन शब्दों का व्यवहार करता चलता है किंतु इसकी भी एक सीमा होती है। ऐसे में अनुवादक को भाषा–विशेष के तकनीकी शब्दों के समतुल्य पर्यायों को जानने की आवश्यकता होती है। ऐसे में विषय–विशेष से संबंधित शब्दावली के कोशों का सहारा लेना आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य भी हो जाता है। पारिभाषिक शब्दावली को कई आकारों के कोशों में एकत्रित करके प्रस्तुत किया जा सकता है। लेकिन मुख्य रूप से शब्द और शब्दकोशों के रूप में इनका उपयोग सबसे अधिक होता है। ये दोनों एकल भाषा में भी हो सकते हैं और द्विभाषा में भी। अनुवादक तत्संबंधी विषयों से संबद्ध पारिभाषिक शब्द–संग्रहों (glossaries) एवं तकनीकी परिभाषा कोशों (Difinitional Dictionaries) का सहारा लेकर अनुवाद कार्य करते हैं। विषय–विशेष से संबद्ध सामग्री के अनुवाद में इस प्रकार के कोश सिद्ध होते हैं।

9.5 कोशों के वर्ग

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो गया है कि कोश, शब्दों का वह संग्रह होता है जिसमें आवश्यकता के अनुसार एक भाषा के शब्दों का उसी भाषा में या फिर अन्य भाषा/भाषाओं में उनके प्रचलित एवं शुद्ध रूप, व्युत्पत्ति, अर्थ, व्याकरणिक जानकारी, प्रयोग, उच्चारण, पर्याय, विलोम आदि संबंधी जानकारी क्रमबद्ध रूप में दी हुई होती है। किसी एक कोश में शब्दों संबंधी ये सभी जानकारियाँ आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शामिल की जाती हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी एक कोश में भाषा की जानकारी विशेष पर ज्यादा ध्यान दिया हुआ हो सकता है और जानकारी के किसी पक्ष–विशेष को बिल्कुल भी शामिल नहीं किया हो सकता। यही कारण है कि हमें विभिन्न प्रकार के कोश देखने को मिलते हैं। भाषा, बोली, साहित्य, ज्ञान विषय क्षेत्र, साहित्यिक कृति, कृतिकार आदि विविध पक्षों एवं स्तर–भेदों के आधार पर विभिन्न प्रकार के कोशों का निर्माण किया जाता है। इनका निर्माण करते समय उनकी उपयोगिता को दृष्टि में रखा जाता है ताकि वे प्रयोक्ताओं के लिए उपादेय सिद्ध हो सकें। वैसे, इनके विविध प्रकारों को कुछ आधार लेकर या वर्ग बनाकर वर्गीकृत किया जाता है। लेकिन, यदि कोशों को जिन दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, वे हैं – (1) भाषिक कोश; और (2) भाषेतर कोश। ये मुद्रित रूप में भी उपलब्ध हो सकते हैं और डिजिटल रूप में भी। उक्त उल्लिखित विभिन्न प्रकार के कोश इन्हीं दोनों वर्गों में समाहित हो सकते हैं।

(1) **भाषिक कोश :** भाषिक कोशों के अंतर्गत वे कोश शामिल किए जा सकते हैं जिनमें भाषा और उसके विशिष्ट घटकों का आधार लेकर कोश तैयार किए गए हैं। इन आधारों में भाषा के शब्दों की व्युत्पत्ति, पर्याय, विपर्याय, उच्चारण आदि जैसे पक्ष शामिल हैं। उदाहरण के लिए भाषिक कोश के अंतर्गत 'एकभाषिक कोश', 'द्विभाषिक कोश', 'बहुभाषिक कोश', 'उपभाषा/बोली कोश', 'अपभाषा कोश', 'ऐतिहासिक कोश', 'तुलनात्मक कोश', 'उच्चारण कोश', 'व्युत्पत्ति कोश', 'पर्याय कोश', 'विलोम कोश', 'मुहावरा कोश', 'लोकोक्ति कोश', 'अभिव्यक्ति कोश', 'समांतर कोश' आदि शामिल हैं।

(2) **भाषेतर कोश :** वहीं, भाषेतर कोशों में भाषा से इतर विषयों पर तैयार किए गए सभी प्रकार के कोशों को शामिल किया जा सकता है। भाषेतर कोशों के अंतर्गत मुख्य रूप से 'व्यक्ति कोश', 'कृति कोश', 'साहित्य कोश', 'पुराण कोश', 'मिथक कोश', 'पारिभाषिक शब्द संग्रह', 'पारिभाषा कोश', 'विश्व कोश', 'सूक्ति कोश', 'विषय कोश' आदि कोश शामिल किए जा सकते हैं।

9.6 अनुवाद में एकभाषिक कोशों के उपयोग का औचित्य

एकभाषिक कोश के अंतर्गत भाषा और शैली के विभिन्न पक्षों से संबंधित विषय शामिल हैं। कोशों में भाषा–विशेष के शब्द वर्णक्रम के अनुसार संकलित–संग्रहीत रहते हैं। विशेष बात यह रहती है कि इस प्रकार संकलित शब्दों के विविध पर्याय और अर्थछायाएँ उसी भाषा में दिए हुए होते हैं। स्वाभाविक है, संकलित शब्दों के उसी भाषा में कमोबेश सभी अर्थ भी दिए होते हैं। केवल इतना ही नहीं, इस प्रकार के कोशों में संकलित शब्दों के विभिन्न अर्थों–पर्यायों एवं अर्थछटाओं आदि के साथ–साथ उनकी व्याकरणिक कोटियाँ (जैसे, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण, विशेषण और वचन आदि) संबंधी जानकारी भी दी हुई है। वहीं, कोश में शामिल शब्दों में अर्थ के स्तर पर व्याप्त अंतर को स्पष्ट

करने के लिए उद्धरण आदि भी दिए रहते हैं। इस प्रकार के उद्धरणों को शामिल करने से कोश उपयोक्ता शब्द–विशेष के भिन्न–भिन्न अर्थों को विविध प्रयोगों के आधार पर भी जान पाता है। इसके अलावा, शब्दों की व्युत्पत्ति और विकासक्रम संबंधी जानकारी का भी उसमें समावेश हो सकता है। कोश में तरह–तरह की जानकारियों के कोश में शामिल होने के बारे में शुरू में संकेत तालिकाओं के जरिए संकेत किया हुआ होता है।

इन सभी पक्षों के एकभाषी कोश में समावेश से उसके उपयोक्ताओं को भाषा–विशेष की भाषा एवं शैली संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। वैसे, इन सभी प्रकार की जानकारियों का किसी एकभाषी कोश में समावेश, उसके आकार–प्रकार आदि पर भी निर्भर करता है। इन तमाम तरह की जानकारियों की एक ही स्थल पर उपलब्धता के कारण एकभाषिक कोश भाषा–विशेष के अध्येताओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। ऐसे में, प्रश्न यह उठता है कि क्या अनुवादकों को एकभाषिक कोशों की आवश्यकता होती है क्योंकि अनुवाद तो दो भाषाओं के बीच होने होने वाली गतिविधि है? इसलिए, इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करना जरूरी है।

अनुवाद कार्य के दौरान, एक भाषा (अर्थात स्रोत भाषा) की सामग्री को दूसरी भाषा (अर्थात लक्ष्य भाषा) में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रस्तुतीकरण में स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा से संबंधित शब्दकोश सहायक सिद्ध होता है। इसलिए अक्सर यह मान लिया जाता है कि अनुवादक को ऐसा द्विभाषिक कोश सहायक सिद्ध होता है जो स्रोत भाषा की भाषा और शैली से संबंधित हो और जो उस भाषा–शैली का लक्ष्य भाषा–शैली में पर्याय उपलब्ध कराता हो। इसी वजह से यह मान लिया जाता है अनुवाद में एकभाषिक कोश की कोई उपयोगिता नहीं है। आइए सबसे पहले हम इसी पक्ष पर विचार करें कि क्या अनुवादक को अनुवाद कार्य के दौरान एकभाषिक कोशों की आवश्यकता भी पड़ती है अथवा नहीं।

हालाँकि अनुवाद, दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाली गतिविधि है, इसलिए इसमें सहायक साधन–उपकरणों के रूप में द्विभाषी कोशों की आवश्यकता होती है। लेकिन यह भी स्वीकार किया जाता है कि अनुवाद कर्म की प्रक्रिया में एकभाषिक कोशों की भी जरूरत पड़ती है। अगर अनुवादक को भाषा के किसी शब्द–विशेष के विभिन्न अर्थों का पता लगाना हो तो ऐसे में एकभाषिक कोश उसके लिए महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होता है।

9.7 अनुवाद में द्विभाषिक कोशों की उपयोगिता

अनुवाद में एकभाषिक कोशों के उपयोग के औचित्य के बारे में जानने के पश्चात आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवादक को इनकी भी अक्सर आवश्यकता पड़ती है। आइए अब हम यह जानें कि अनुवाद में द्विभाषिक कोशों की क्या उपयोगिता है।

जब अनुवादक अनुवाद कर्म में प्रवृत्त होता है तो वह एक भाषा (स्रोत भाषा) की सामग्री के कथ्य को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में प्रस्तुत करता है। इस तरह देखा जाए तो अनुवाद का संबंध दो भाषाओं – स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा – से है। अनुवाद कार्य के दौरान अनुवादक को इन्हीं दो भाषाओं से संबंधित द्विभाषिक कोशों की आवश्यकता पड़ती है। अनुवाद में इस प्रकार के कोशों की सर्वाधिक उपयोगिता है।

जिस तरह से अनुवाद दो भाषाओं से संबंधित होता है, उसी प्रकार द्विभाषिक कोशों का संबंध भी दो भाषाओं से होता है। ये दो भाषाएँ कोई भी हो सकती हैं – देशी भी और

विदेशी भी। द्विभाषिक कोश में किसी एक भाषा–विशेष के शब्दों का अर्थ, उनका उच्चारण तथा प्रयोग संदर्भ को दूसरी भाषा में दिया जाता है। इनमें से जिस भाषा के शब्दों के अर्थ, उच्चारण एवं प्रयोग आदि शामिल हैं वह 'स्रोत भाषा' होती है और जिस दूसरी भाषा में उनका अर्थ, उच्चारण एवं प्रयोग–संदर्भ दिया जाता है वह 'लक्ष्य भाषा' होती है। इस प्रकार द्विभाषिक कोशों में दोनों भाषाओं (अर्थात स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा) के शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग आदि शामिल होते हैं।

यहाँ आप यह सोच सकते हैं कि कोश की प्रथम भाषा कौन–सी होगी और द्वितीय भाषा कौन–सी? आपको यह ध्यान में रखना होगा कि इन कोशों की प्रथम भाषा स्रोत भाषा अथवा लक्ष्य भाषा में से कोई भी हो सकती है। इनमें मुख्य बात यह रहती है कि शब्द एक भाषा के होते हैं और उनके अर्थ तथा प्रयोग दूसरी भाषा में रहते हैं। उदाहरण के लिए, प्रशासनिक साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में अंग्रेजी–हिंदी के बीच अनुवाद की गतिविधि का सबसे अधिक महत्व है। इसे भली प्रकार से संपादित करने में अनुवाद के सहायक उपकरण के रूप में अंग्रेजी–हिंदी और हिंदी–अंग्रेजी द्विभाषिक शब्दकोश सार्थक रहते हैं। स्वाभाविक है कि दो भाषाओं के युग्म वाले ये कोश 'द्विभाषिक कोश' कहलाएँगे।

अनुवादक को दोनों भाषाओं (स्रोत और लक्ष्य भाषा) की प्रकृति और प्रयोग को ध्यान में रखकर द्विभाषिक कोशों को व्यवहार में लाना चाहिए। इसका कारण यह है कि सभी भाषाओं की प्रकृति और संरचना एक–सी नहीं होती है, उसमें भिन्नता व्याप्त होती है। यह भिन्नता ही उनके अलग–अलग होने का आधार होती है। इसलिए अनुवादक को स्रोत भाषा पाठ को गहराई से समझने के पश्चात लक्ष्य भाषा की प्रकृति और संरचना के अनुरूप अनुवाद करना चाहिए ताकि अनुवाद सहज रूप से संप्रेषणीय हो। और यह तभी संभव हो पाता है जब लक्ष्य भाषा पाठ की भाषा सहज और प्रवाहमयी हो। इसके लिए उसे सटीक अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों को प्रयुक्त करना चाहिए।

शब्दों के सटीक पर्याय चयन में द्विभाशी कोश, अनुवादक की सहायता करते हैं। इन कोशों में प्रविष्ट शब्द विशेष के अर्थ–पर्यायों के साथ–साथ अन्य कई प्रकार की जानकारियों का भी समावेश हो सकता है। जैसे, शब्दार्थ के साथ–साथ उसके उच्चारण का भी पता चलना। इसके अलावा, विभिन्न व्याकरणिक कोटियों के संदर्भ में उसके पर्याय भी दिए होते हैं तथा उससे मिलकर बनने वाले अन्य शब्दों का भी पता चल जाता है। इसे स्पष्ट करने के लिए हम फादर कामिल बुल्के के अंग्रेजी–हिंदी कोश में 'accuse' शब्द की प्रविष्ट का उदाहरण लेते हैं :

"1.दोष लगाना, रोषारोप करना, आरोप करना; 2. (law) अभियोग लगाना; –अभियुक्त, मुलजिम –r अभियोक्ता।

>ॲक्यूजय; ॲक्यज़्ड; ॲ–क्यू–जॅ"

उक्त प्रविष्टि से यह पता चलता है कि 'accuse' शब्द का सामान्य अर्थ है – "दोष लगाना", "रोषारोप करना" और "आरोप करना"। वहीं विधि (Law) के संदर्भ में इसका अर्थ है – "अभियोग लगाना"। इसी तरह, 'accuse' शब्द के साथ 'd' मिलाकर बने 'accused' शब्द का अर्थ है – "अभियुक्त", "मुलजिम" और 'accuser' शब्द का अर्थ है – "अभियोक्ता"।

इस प्रकार स्पष्ट है कि द्विभाषिक कोश में एक ही शब्द के संदर्भ में इतनी अधिक एवं

विस्तृत जानकारी उपलब्ध होती है। अनुवादक अपनी आवश्यकता के अनुसार, उनमें से आवश्यक जानकारी को ग्रहण कर सही और समातंर अर्थ विधान के लिए लक्ष्य भाषा में सटीक प्रतिशब्द का प्रयोग कर बेहतर अनुवाद कर पाने योग्य हो पाता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि द्विभाषिक कोशों की उपयोगिता अनुवाद का मूल कारक है। अनुवाद कर्म में देश–विदेश की भाषाओं के द्विभाषिक कोश अनुवाद में सहायक होते हैं।

द्विभाषिक कोश अनुवाद कार्य में तो सहायक होते ही हैं, पुनरीक्षण कार्य में भी इनकी उपयोगिता और महत्व निर्विवाद है। पुनरीक्षण के संबंध में आप इस पाठ्यक्रम की इकाई–19 में विस्तार से अध्ययन करेंगे। यहाँ आपको संक्षेप में यह जानकारी देना चाहते हैं कि 'पुनरीक्षण' शब्द अंग्रेजी के 'vetting' शब्द के समतुल्य प्रयुक्त होता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – पुनः देखना यानी दोबारा देखना। जब अनूदित सामग्री की मूल से जाँच की जाती है तो इसका अर्थ यह होता है कि उसका पुनरीक्षण किया जा रहा है। अनूदित सामग्री को जाँचने का कार्य करने वाला व्यक्ति मूलतः अनुवादक ही होता है, किंतु वह वरिष्ठ एवं ज्यादा अनुभवी होता है। पुनरीक्षक अनूदित सामग्री का पुनरीक्षण करते समय द्विभाषिक कोशों की भी सहायता लेता है। इनकी सहायता से वह यह जाँच करता है कि क्या लक्ष्य भाषा का चयनित पर्याय/शब्द सटीक है अथवा नहीं। उदाहरण के लिए, स्रोत भाषा सामग्री में प्रयुक्त 'resource person' शब्द का अनुवाद यदि 'संसाधन विशेषज्ञ' कर दिया गया है तो पुनरीक्षक कोश की सहायता लेते हुए उसे सुधार कर 'विषय–विशेषज्ञ' कर देगा। इसी प्रकार, 'dead body' शब्द के लिए 'मृत शरीर' के स्थान पर 'शव' कर देगा। कोश हमें यह बता देगा कि 'invalid document' 'अवैध दस्तावेज' न होकर 'अमान्य दस्तावेज' होता है।

यहाँ आपको यह जानकारी देना भी उपयुक्त होगा कि कुछ द्विभाषिक कोश दुतरफा भी होते हैं। यानी एक ही जिल्द में पूर्वार्ध में एक भाषा–विशेष से दूसरी भाषा–विशेष में पर्याय आदि दिए जाते हैं, तो जिल्द के उत्तरार्ध में दूसरी भाषा से पहली भाषा में पर्याय आदि दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, Larousse Pocket Dictionary के पूर्वार्ध में फ्रांसीसी–अंग्रेजी (French-English) शब्दकोश है और उत्तरार्ध में अंग्रेजी–फ्रांसीसी (English-French) शब्दकोश। इसी प्रकार, एक ही जिल्द में प्रकाशित Longenscheidt Universal Italian में इतालवी–अंग्रेजी (Italian-English) और अंग्रेजी–इतालवी (English-Italian) से संबंधित शब्दकोश है। वैसे, कुछ कोश दो से अधिक भाषाओं वाले भी होते हैं, जिन्हें 'बहुभाषिक कोश' कहा जा सकता है। जैसे, संस्कृत–हिंदी–अंग्रेजी कोश, हिंदी–अंग्रेजी–उर्दू कोश आदि।

9.8 विविध प्रकार के कोश : अनुवाद में उपयोगिता का संदर्भ

अनुवाद में एकभाषिक और द्विभाषिक कोशों की आवश्यकता पड़ती रहती है। कोश विभिन्न प्रकार के होते हैं। अनुवाद में कोशों की उपयोगिता पर विचार करते समय हमें कोशों के अलग–अलग प्रकारों के संदर्भ में उनकी उपयोगिता को देखना भी जरूरी महसूस होता है। इसलिए यहाँ हम अनुवाद में उपयोगिता के संदर्भ में विविध प्रकार के कोशों पर विचार कर रहे हैं। इस संदर्भ में सबसे पहले 'उपभाषा कोश अथवा बोली कोश का अनुवाद में उपयोग' पर विचार करना उपयुक्त रहेगा।

9.8.1 उपभाषा कोश/बोली कोश

"उपभाषा कोश" अथवा "बोली कोश" का संबंध मानक भाषा विशेष की किसी बोली–विशेष से होता है। मानक रूप धारण कर चुकी भाषा में आम तौर पर अनेक प्रकार की बोलियों का समावेश होता है। उदाहरण के लिए, हिंदी एक भाषा न होकर एक भाषा–समूह है, जिसकी अनेक बोलियाँ भी हैं। हिंदी की उपभाषाओं/बोलियों में ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, मगही, हरियाणवी, बुंदेलखंडी, मारवाड़ी आदि विभिन्न बोलियाँ शामिल हैं।

मानक भाषा में रचित साहित्यिक कृतियों में बोलियों अथवा उपभाषाओं के शब्द एवं प्रयोग मिले हुए होते हैं। ये शब्द एवं प्रयोग क्षेत्रीय रीति–रिवाजों, रहन–सहन, खान–पान और कृषि आदि से संबंधित हो सकते हैं। ये शब्द या प्रयोग अँचल विशेष के होते हैं। इस प्रकार के शब्दों–प्रयोगों के सटीक अर्थ–बोध के लिए उपभाषा कोश का उपयोग लाभकारी सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी साहित्य में कई जगह स्कॉटिश और वेल्श भाषा के शब्द प्रयोग मिलते हैं। भाषा समूह होने के कारण हिंदी भाषा में तो यह प्रवृत्ति सहज रूप से देखी जा सकती है। यहाँ हम उदाहरण के तौर पर भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" का उल्लेख कर सकते हैं जिसमें एक जगह यह उल्लेख है कि "वाह! कोई बढ़िया टप्पे सुना दो। दो पत्तर अनारां दे...."। यहाँ "टप्पे" और "दो पत्तर अनारां दे" जैसे शब्द प्रयोग आँचलिक आयाम लिए हुए हैं।

किसी भी भाषा की साहित्यिक कृतियों में जहाँ इस प्रकार के क्षेत्रीय शब्द प्रयोगों को देखा जा सकता है, वहीं विशेष तौर पर भाषा विशेष के विशुद्ध रूप से लिखे आँचलिक कथा साहित्य का भी उल्लेख किया जा सकता है। आँचलिक साहित्यिक कृतियों में इस प्रकार के शब्द एवं प्रयोग बहुत अधिक मिलते हैं। उदाहरण के लिए, फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास "मैला आँचल" हो या फिर श्रीलाल शुक्ल का "राग दरबारी"। इसी क्रम में राही मासूम रजा के "आधा गाँव", रांगेय राघव का "कब तक पुकारूँ", नागार्जुन का "बलचनमा" और विवेकी राय का "सोना माटी" आदि का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिनमें आँचलिक–तत्वों की प्रधानता है। अगर इस प्रकार के आँचलिक साहित्य का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाए तो पाठक अथवा अनुवादक को बड़ी कठिनाई होती है। यह समस्या उस समय और भी अधिक हो जाती है जब पाठक की अपनी भाषा और संस्कृति बिल्कुल भिन्न हो। ऐसे में आँचलिक अभिव्यक्तियों के सटीक अर्थ–बोधन में उपभाषा/बोली कोश सहायक सिद्ध होते हैं।

बोली या उपभाषा कोश में बोली/उपभाषा के शब्दों और प्रयोगों का अर्थ सहित संग्रह किया हुआ होता है। इस प्रकार के कोशों में किसी भी भाषा विशेष के अंतर्गत आने वाले किसी एक बोली–विशेष के शब्द दिए हुए होते हैं। वैसे तो भाषा–विशेष के मानक शब्दकोशों में उसकी विभिन्न बोलियों या आँचलिक–स्थानीय शब्दों को भी आम तौर पर स्थान प्राप्त होता ही है, किंतु उनकी भी एक सीमा होती है। जबकि उपभाषा कोश/बोली कोश पूरी तरह से बोली अथवा उपभाषा के शब्दों और प्रयोगों पर केंद्रित होते हैं। यानी उनमें बोली अथवा उपभाषा–विशेष के अत्यधिक शब्द और प्रयोग मिल जाते हैं। इस प्रकार के कोश दो रूपों में उपलब्ध होते हैं :

(1) ऐसे उपभाषा/बोली कोश, जिनमें बोली विशेष के ही शब्द होते हैं। इस प्रकार के कोशों में एक ही बोली के शब्दों का वर्णन किया हुआ होता है; और

(2) ऐसे कोश जिनमें भाषा–विशेष की सभी बोलियों के शब्दों का वर्णन किया हुआ होता है।

इनमें से दूसरे प्रकार के कोश आकार में बड़े होते हैं क्योंकि उनमें शब्द विशेष के सभी बोलीगत विवरणों को शामिल किया हुआ होता है। इन कोशों में प्रत्येक प्रविष्टि से संबंधित विवरणों के साथ–साथ उस बोली विशेष का भी नाम दे दिया जाता है जिसमें वह शब्द व्यवहार में लाया जाता है।

साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में उपभाषा/बोली कोश की विशेष प्रासंगिकता है। स्रोत भाषा सामग्री में प्रयुक्त उपभाषा अथवा बोली से संबंधित शब्दों का अनुवाद करते समय अनुवादक को कठिनाई अनुभव हो जाती है क्योंकि आम तौर पर मानक भाषा के शब्दकोशों में इस प्रकार के शब्द नहीं मिलते। ऐसी स्थिति में अनुवादक के लिए उपभाषा कोशों की उपादेयता स्वयंसिद्ध है। इसलिए यदि अनुवादक फणीश्वरनाथ "रेणु" के उपन्यास "मैला आँचल" का अनुवाद कर रहा है और वह पूर्वांचल की भोजपुरी तथा मैथिली बोलियों–भाषाओं से परिचित नहीं है तो उसे इनके कोश की आवश्यकता पड़ेगी।

उपभाषा कोशों में मुख्य रूप से जोसफ राइट (Joseph Wright) द्वारा तैयार किया गया अंग्रेजी का कोश 'The English Dialect Dictionary' उल्लेखनीय है। यह कोश ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड से प्रकाशित है। इसी तरह हिंदी की ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेली, भोजपुरी आदि बोलियों के कोशों में से सुधींद्र कुमार का "ब्रजभाषा शब्दकोश", हरराज का "डिंगलनामा", राजस्थान शोध संस्थान का "डिंगल कोश", दीनबंधु झा का "मैथिली भाषा कोश", रामाज्ञा द्विवेदी का "अवधी कोश" आदि उल्लेखनीय हैं। इसी संदर्भ में डॉ. भोलानाथ तिवारी का "ताज़ुब्बेकी कोश" भी उल्लेखनीय है।

9.8.2 अपभाषा/भदेस भाषा कोश

बोलचाल की भाषा में कभी–कभी अपभाषा, भदेस या भद्दी भाषा अथवा अपभ्रष्ट शब्दों से युक्त भाषा को व्यवहार में लाया जाता है। इस प्रकार के अमानक शब्द–प्रयोगों या भाषा को 'अपभाषा' कहते हैं। इसे 'चालू भाषा' भी कह दिया जाता है। अंग्रेजी में इस प्रकार के शब्दों/भाषा को 'Slang' कहा जाता है। हालाँकि औपचारिक अवसरों अथवा अच्छे लेखन कार्य में अपभाषा शब्दों का प्रयोग उपयुक्त नहीं माना जाता क्योंकि यह ऐसा शब्द–विधान होता है जिनका मानक भाषा की शब्दावली और प्रयोग से अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता है। ऐसे भाषिक प्रयोग मानक हिंदी प्रयोक्ताओं के बीच बातचीत में भी आम तौर पर व्यवहार में लाए जाते हैं। हालाँकि समाज का पढ़ा–लिखा शिष्ट समुदाय अपने जीवन–व्यवहार में आम तौर पर भाषा के मानक रूप को प्रयुक्त करता है लेकिन, अनपढ़ या कम पढ़ा–लिखा या आशिष्ट समुदाय अपने जीवन व्यवहार में अशिष्ट भाषा अथवा शब्दों को भी प्रयुक्त करते हैं। भाषा में इस प्रकार के अशिष्ट प्रयोगों को 'अपभाषा' कहा जाता है। इसे 'भदेस भाषा' अथवा 'चालू भाषा' भी कहा जाता है। जैसे हिंदी में "टाँग अड़ाना", "पंगा लेना", "फट्टे मारना", "साला" आदि शब्दों का प्रयोग करना। ध्यान देने की बात यह है कि अपभाषा शब्दों का कोशीय अर्थ न होकर किसी समाज विशेष में प्रयोगधर्मिता पर आधारित अर्थ–संदर्भ होता है। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग के संदर्भ में विशेष बात यह है कि इनके प्रयोग वस्तुतः चालू भाषा के प्रयोग का ही अंग होते हैं।

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि मानक भाषा का सहज–सामान्य प्रतीत होने वाला शब्द भी चालू भाषा में कुछ भिन्न अर्थ ही ग्रहण कर लेता है। उदाहरण के लिए, 'पेटी' शब्द सामान्य अर्थ में भले ही 'छोटा संदूक' जैसे अर्थ का बोध कराए, लेकिन उसका चालू भाषा में रुपए के साथ 'एक लाख रुपया' अर्थ हो जाता है। इसी प्रकार, 'खोखा', 'सुपारी' आदि शब्दों को भी देखा जा सकता है। चालू भाषा के प्रयोग में अमानक शब्द प्रयोगों का विस्तार गाली–गलौज के रूप में नजर आता है।

साहित्य, इस प्रकार के अपभाषा प्रयोग से बचा नहीं रह पाता है। इसका मूलभूत कारण यह है कि साहित्य, समाज का दर्पण है और समाज में जो भी चलन में – भले ही वह अपभाषा प्रयोग भी क्यों न हो, साहित्य में भी प्रतिबिंबित हो ही जाता है। यह भाषिक प्रयोग कहीं–कहीं शिष्ट साहित्य में भी स्थान पा लेता है, लेकिन अपभाषा शब्दावली का अपेक्षाकृत अधिक व्यवहार विशेष तौर पर आँचलिक साहित्य में नजर आता है। इसके अलावा, मुंबइया हिंदी आदि में भी इसी प्रकार की शब्दावली का काफी प्रयोग नजर आता है। उदाहरण के लिए, 'बीडू', 'टपोरी' आदि शब्द इसी तरह के अपभाषा प्रयोग के प्रमाण हैं।

सामान्य कोश बनाते समय इस प्रकार के भाषिक प्रयोगों को कोश में स्थान देते समय पर्याप्त सावधानी बरती जाती है। कोशकार, निर्धारित कोश निर्माण नीति के आलोक में या तो इस प्रकार के शब्दों को या आम तौर पर व्यवहृत सामान्य शब्दों में निहित अपभाषिक अर्थ–संदर्भ को शामिल नहीं करता। और, अगर वह उन्हें शामिल करता भी है तो स्वयं को मर्यादित करते हुए। लेकिन, कुछ ऐसे भी कोश तैयार किए गए हैं जो केवल अपभाषा आधारित ही होते हैं। इन अपभाषा कोशों में बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त अपभाषा, भदेस या भद्दी भाषा अथवा अपभ्रष्ट शब्द विधान को स्थान दिया जाता है।

पहले यह प्रवृत्ति रही है कि कोई भी सामान्य शब्दकोश तैयार करते समय भाषा के अमानक/अपभाषा शब्दों को स्थान नहीं दिया जाता था। लेकिन अब यह प्रवृत्ति नहीं रही, इसमें परिवर्तन आ गया है। अब भाषा के सामान्य कोशों में तो इस प्रकार के शब्दों को स्थान दिया ही जाता है, इसके अलावा ऐसे भी विशिष्ट शब्दकोश उपलब्ध हैं जिनमें केवल अपभाषा शब्द, उनकी परिभाषाएँ, उद्धरण तथा उनके उद्भव आदि संबंधी विस्तृत जानकारी दर्ज होती है। अपभाषा कोश निर्माण केवल यहीं तक ही सीमित नहीं है। ऐसे भी शब्दकोश तैयार किए जा रहे हैं जो अलग–अलग और भिन्न–भिन्न प्रकार के काम करने वाले विशेष व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले अपभाषा शब्दों पर आधारित शब्दकोश भी हैं। अंग्रेजी में इस प्रकार का 'A Dictionary of Slang and Unconventional English : Colloquilisms and Catch Phrases, Solecisms and Catechism, Nicknames, Vulgarism and such Americanism as have Naturalised' जैसा कोश मिलता है। 1970 में प्रकाशित और न्यूयॉर्क स्थित मैकमिलन कंपनी द्वारा निर्मित इस कोश को एरिक पैट्रिज (Erik Patridge) ने तैयार किया था। टॉम ढलजैल (Tom Dalzell) द्वारा तैयार किया गया 'Modern American Slang and Unconventional English' शीर्षक कोश भी इसी प्रकार का ही एक अपभाषा कोश है। हिंदी में इस प्रकार के कोशों के निर्माण कार्य का नितांत अभाव नजर आता है।

यदि अनूद्य सामग्री में चालू भाषा के शब्द भी स्थान प्राप्त किए हुए हों तो अनुवादक के लिए लक्ष्य भाषा में उनका समतुल्य पर्याय रखने की समस्या हो जाती है। ऐसे में

अनुवादक के लिए आवश्यक हो जाता है कि पहले वह इस प्रकार की शब्दावली को ठीक से समझे और फिर उसके बाद उसका लक्ष्य भाषा में सही–सही अनुवाद करे ताकि लक्ष्य भाषा में समतुल्य प्रभाव बनाए रखा जा सके। वस्तुतः स्रोत भाषा में प्रयुक्त अपभाषा शब्दों के प्रयोगों के अनुवाद हेतु अनुवादक को अपभाषा कोश का सहारा लेना पड़ता है। अगर स्रोत भाषा में अपभाषा कोश उपलब्ध है तो अनुवादक को अनूद्य सामग्री में इस्तेमाल किए गए चालू शब्द प्रयोग के प्रयोगगत अर्थ को समझने के लिए इनकी सहायता लेनी ही चाहिए। इस तरह हम कह सकते हैं कि अनुवाद कार्य के दौरान लक्ष्य भाषा में समांतर अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए इस प्रकार के अपभाषा कोश उपयोगी सिद्ध होते हैं, लेकिन हिंदी में इस प्रकार के कोश प्रायः उपलब्ध नहीं हैं।

9.8.3 पारिभाषिक शब्द संग्रह/शब्दावली/कोश

"पारिभाषिक कोश" विशिष्ट दृष्टि के आधार पर निर्मित किए जाने वाले कोश होते हैं। इन्हें "पारिभाषिक शब्द संग्रह" और "पारिभाषिक शब्दावली" भी कहा जाता है। मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, मीडिया, विधि आदि विभिन्न ज्ञानानुशासनों पर केंद्रित पारिभाषिक शब्द–संग्रह आदि आम तौर पर विषयवार तैयार किए हुए होते हैं। यानी इनमें विषय अथवा ज्ञान–क्षेत्र से संबंधित शब्दों–प्रविष्टियों को ही संकलित–संपादित किया जाता है। वैसे, इस प्रकार के कोशों में कोशकार अपनी आवश्यकता के अनुरूप संकलित शब्दों के उच्चारण और व्युत्पत्ति के साथ–साथ प्रयोग–वैविध्य आदि जैसे पक्षों को भी शामिल करते हुए आवश्यक जानकारी देता चलता है। पारिभाषिक कोश में विषय या ज्ञान क्षेत्र से संबंधी शब्दों–प्रविष्टियों मात्र का संकलन–संपादन पारिभाषिक शब्दावली को सामान्य कोश अलग पहचान देता है क्योंकि सामान्य कोश में आम तौर पर प्रचलित शब्दों का संकलन मात्र किया हुआ होता है जबकि पारिभाषिक शब्दावलियों में ज्ञान–विज्ञान की शाखा/प्रशाखा–विशेष में विशिष्ट ज्ञान के द्योतक शब्द होते हैं।

विज्ञान, विधि, वाणिज्य आदि ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के अनुवाद के लिए पारिभाषिक शब्दावली/कोश/शब्द संग्रह महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। अनुवादक विषय–विशेष की सामग्री का अनुवाद करते समय या अनूद्य सामग्री में आए ज्ञान–विशेष की पारिभाषिक शब्दावली के पर्याय को जानने के लिए पारिभाषिक शब्द संग्रह/शब्दावली/कोशों का सहारा लेता है। उदाहरण के लिए, प्रशासन से संबंधित सामग्री का अनुवाद करते समय वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित "प्रशासनिक शब्दावली" अनुवादक के लिए उपयोगी सिद्ध होती है। यह शब्दावली अनुवादक को बताती है कि 'Head of account has not been given on the final bill.' वाक्य में प्रयुक्त 'Head of account' में निहित भाव को समझते हुए इसका अनुवाद 'अंतिम बिल पर लेखा–शीर्ष नहीं लिखा गया है।' किया जाएगा। अगर अनुवादक इस शब्दावली को नहीं देखेगा तो हो सकता है कि वह 'Head of account' का अनुवाद 'लेखा–अध्यक्ष' या कुछ और कर सकता है। इसी प्रकार, यदि अनुवादक विधि संबंधी सामग्री का अनुवाद कर रहा हो तो उसे इनसे संबंधित पारिभाषिक शब्दों के समतुल्य जानने के लिए "विधि शब्दावली" का प्रयोग करना चाहिए। इसलिए अनुवादक को विषय–विशिष्ट शब्दावली की अच्छी जानकारी अपेक्षित होता है।

पारिभाषिक शब्दावली की उपयोगिता और महत्व को ध्यान में रखकर भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने मानविकी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, चिकित्सा

आदि से संबंधित 'बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह' और विशिष्ट अनुशासन (विषय) से संबद्ध पारिभाषिक शब्द संग्रहों को अलग–अलग भी प्रकाशित किया गया। इस प्रकार के शब्द संग्रहों आदि के माध्यम से अंग्रेजी के वे संकल्पनात्मक एवं तकनीकी शब्दों के हिंदी प्रतिशब्द आसानी से मिल जाते हैं, जो स्वयं में परिभाषेय होते हैं। विशेष बात यह है कि ये शब्द स्वयं में मानक होते हैं। इनसे पारिभाषिक शब्द प्रयोग के स्तर पर लक्ष्य भाषा में एकरूपता आती है। आयोग द्वारा निर्मित शब्दावलियों में अंग्रेजी–हिंदी की कई अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावलियाँ भी प्रकाशित हैं।

भारत के उच्चतम न्यायालय ने भी यह निर्णय दिया है कि अखिल भारतीय स्तर पर भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का ही प्रयोग किया जाए। इस तरह न्यायालय ने आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली के प्रयोग की अनिवार्यता स्थापित करके पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता को समाप्त करने और ज्ञान–विज्ञान के समस्त क्षेत्रों में हर जगह एकसमान मानक शब्दावली का प्रयोग सुनिश्चित करने को एक सार्थक दिशा दी है।

भारत सरकार ने प्रामाणिक पारिभाषिक शब्द संग्रहों/कोशों में (1) बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह (मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान) (2) बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह–विज्ञान (दो खंडों में) (3) आकाशवाणी शब्दकोश (4) विधि शब्दावली (5) प्रशासनिक शब्दावली (6) आयकर शब्दावली आदि विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं।

9.8.4 परिभाषा कोश

परिभाषा कोश में पारिभाषिक शब्दों के समतुल्य के साथ–साथ उनकी परिभाषाएँ भी दी हुई होती हैं। इस प्रकार परिभाषा कोश, किसी परिभाषय शब्द विशेष की निश्चित परिभाषा को व्यक्त करने वाला है। परिभाषा कोश के जरिए पारिभाषिक शब्द की अवधारणा स्पष्ट हो जाती है। यही कारण है कि इस प्रकार के कोशों को "अवधारणा कोश" (Conceptual Glossary) भी कहा जाता है। ये कोश सामान्य न होकर ज्ञानानुशासन या उसकी किसी प्रशाखा–विशेष से जुड़े शब्द होते हैं। अनुवादकों सहित सामान्य पाठक, ज्ञान–विशेष के क्षेत्र में अध्ययन–अध्यापन करने वाले विद्यार्थी एवं शोधार्थी इनका प्रयोक्ता वर्ग है। अनुवादक पारिभाषिक शब्दों के प्रतिशब्द तो 'पारिभाषिक शब्दावली' में देख लेता है लेकिन जब अनूद्य सामग्री के वास्तविक अर्थ को पूरे संदर्भ से समझना हो तो 'परिभाषा कोश' सहायक सिद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी का 'ध्वनि' शब्द, अपने सामान्य अर्थ में अंग्रेजी के 'sound' का प्रतिशब्द है। लेकिन, भारतीय काव्यशास्त्र के संदर्भ में यह 'sound' अर्थ सार्थक सिद्ध नहीं होगा। अगर अनुवादक परिभाषा कोश की सहायता से 'ध्वनि' की काव्यशास्त्रीय अवधारणा को समझ लेगा तो वह बेहतर समानार्थक शब्द का प्रयोग कर सकेगा। अनुवादक को स्रोत भाषा पाठ में कई बार ऐसे शब्दों का भी सामना करना पड़ जाता है जो दिखने में तो सामान्य प्रतीत होते हैं, लेकिन उनमें एक विशिष्ट पारिभाषिक अर्थ होता है। अनुवादक को ऐसे शब्दों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने, उनमें निहित अर्थ के स्पष्ट बोध और फिर उसके आधार पर लक्ष्य भाषा में सटीक अनुवाद करने के लिए परिभाषा कोशों का सहारा लेना जरूरी हो जाता है।

शब्दावली आयोग ने भौतिकी, जीव विज्ञान, गृह विज्ञान, गणित, भूगोल, भूविज्ञान, अनुप्रयुक्त विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी, रसायन विज्ञान, आयुर्विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, मनोविज्ञान, वाणिज्य, रक्षा, गुणता नियंत्रण, भाषाविज्ञान, लोक प्रशासन,

इतिहास, शिक्षा, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, पुस्तकालय विज्ञान, पत्रकारिता, कृषि, इंजीनियरी, पुरातत्व विज्ञान और कला विषयों में परिभाषा कोश प्रकाशित किए हैं। इनके अलावा, आयोग ने अंतरराष्ट्रीय विधि परिभाषा कोश के साथ–साथ नाट्यशास्त्र, फिल्म एवं टेलीविजन परिभाषा कोश भी तैयार किया है। अंग्रेजी में 'Dictionary of World Literature', 'Dictionary of Literary Terms' – Joseph T. Shipley; A Glossary of Literary Terms – M.H. Abrams आदि भी कुछ उल्लेखनीय कोश हैं।

9.8.5 समांतर कोश

अंग्रेजी के 'Thesaurus (थिसॉरस)' शब्द के लिए हिंदी में 'समांतर कोश' व्यवहार में आ रहा है। इसके अलावा, कहीं–कहीं इसके लिए 'पर्याय कोश' शब्द का भी चलन है। 'थिसॉरस' शब्द की व्युत्पत्ति यूनानी भाषा के 'थैजोरस' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है –'खजाना' अथवा 'कोशागार' (treasury) अथवा 'गोदाम' (store-house) अथवा 'खान'। विशिष्ट संकल्पना अथवा विषय–वस्तु से संबंधित सभी शब्दों की प्रविष्टियों को एक स्थान पर वर्गीकृत क्रम में व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुतीकरण करना 'थिसॉरस' कहलाता है। (Thesaurus is a treasury or storehouse of a particular language, collecting together concepts, words and phrases of every kind and register, arranged according to sense.) अंग्रेजी भाषा में 'थिसॉरस' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1852 में पीटर मार्क रॉजे (Peter Mark Roget) ने किया था। उस वर्ष उनका अंग्रेजी थिसॉरस का पहला संस्करण इंगलैंड में प्रकाशित हुआ। हिंदी में आधुनिक एवं समकालीन थिसॉरस की रचना श्री अरविंद कुमार एवं श्रीमती कुसुम कुमार ने की है, जिसे नेशनल बुक ट्रस्ट ने दो खंडों में प्रकाशित किया।

किसी भी सामान्य शब्दकोश की सहायता से हमें 'किसी शब्द के अर्थ का बोध' तो हो जाता है, लेकिन जब बात कहने के लिए कुछ भिन्न किस्म के किसी विशिष्ट शब्द की तलाश होती है या फिर पढ़ते अथवा लिखते समय कभी–कभी ऐसा हो सकता है कि अचानक कोई विशिष्ट शब्द चाहिए होता है, और वह संभवतः याद नहीं आ रहा होता है। कई बार ऐसा भी होता है कि अपनी बात को विशिष्ट अंदाज–शैली में कहने के लिए कोई विशिष्ट प्रकार का शब्द चाहिए – कोई ऐसा शब्द जो बात को उसी विशिष्ट अंदाज से, पूरे बल के साथ – जो श्रोता अथवा पाठक तक बात को वांछित तरीके से, और अपेक्षाकृत अधिक बारीकी से पहुँचा सके। किंतु तब लाख शब्दों को समाए होने के बावजूद सामान्य शब्दकोश हमें वह शब्द नहीं दे पाता जिसकी हमें तलाश होती है। ऐसी स्थिति में 'थिसॉरस' हमारे काम काफी आता है। वह लगभग तत्काल ही, हमारे समक्ष अपेक्षित ऐसे अनेक शब्दो को प्रस्तुत कर देता है। (Thesaurus offers a variety of words to express a given meaning)। उदाहरण के लिए, थिसॉरस में 'model' शब्द की अर्थ–छाया लिए हुए 'copy', 'prototype', 'little', 'form', 'image', 'plan' और 'perfect' आदि अनेक शब्द प्राप्त हो जाते हैं। या फिर, 'prompt' शब्द के अर्थ में 'early', 'speedy', 'remind', 'hint', 'advise' आदि शब्द मिल जाते हैं। इसी प्रकार, हिंदी के 'सही' शब्द को उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है, जिसके लिए हिंदी थिसॉरस में 'अभंजित', 'अवसरानुकूल', 'उत्तम', 'नियमानुकूल', 'नैतिकतापूर्ण', 'वैध', 'संगत', 'वास्तविक', 'सामंजस्यपूर्ण', 'परिपूर्ण' आदि अनेक शब्द प्राप्त हो जाते हैं। और, इसी तरह से 'विसर्जन' अर्थ को व्यक्त करने के लिए 'कार्य समापन', 'जल अवतारण', 'प्रवाहन', 'विघटन', विलपन', 'सभा समापन' आदि अनेक शब्द प्राप्त हो जाते हैं।

थिसॉरस में किसी शब्द के बदले अनेक शब्द, उस शब्द से जुड़े शब्द–युग्म, कठिन के स्थान पर सरल शब्द, चलताऊ शब्द की जगह टकसाली शब्दों के विकल्प दिए हुए होते हैं। (इस दृष्टि से थिसॉरस, पर्याय कोश का भी काम करता है।) दूसरी ओर, वह हमें उनके विपरीत अर्थों वाले शब्दों तक, परस्पर्यायों तक, और हम चाहें तो उससे संबंधित अन्य समांतर शब्द समूहों के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराता है।

'समांतर कोश', 'वैसे तो', 'पर्याय कोश' (Dictionary of Synonyms) ही प्रतीत होता है, किंतु पर्याय कोश की तुलना में इसका प्रयोग–क्षेत्र व्यापक है। वहीं, पर्याय कोश का संबंध साहित्य से है। पर्याय और समांतर कोश के बीच के अंतर को उदाहरण की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'figure' शब्द के लिए किसी भी 'पर्यायवाची कोश' में सामान्यतः (1) emple/symbol, (2) form/frame/physique/ shape (3) digit/number/numeral आदि पर्याय मिल जाएँगे, किंतु यदि इसी 'figure' शब्द को थिसॉरस में तलाश किया जाए तो इसके लिए 'number', 'outline', 'form', 'feature', 'image', 'represent', 'price', 'person of repute' आदि शब्द मिल जाएँगे, जोकि पूर्णतः भिन्न संदर्भों से जुड़े हुए हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में 'समांतर कोश' का अत्यधिक महत्व होता है। चूँकि समांतर कोश में किसी शब्द–विशेष से संबंधित अनेक समानार्थक पर्यायों की सूक्ष्म अर्थछटाओं के पार्थक्य को रेखांकित किया जाता है इसलिए समतुल्य अर्थछटाओं का आधार लेकर किए जाने वालो भाषा–अंतरण कार्य (अर्थात अनुवाद) में प्रसंग–सापेक्ष प्रामाणिक शब्द के चयन और अनुप्रयोग में आसानी होती है। इस दृष्टि से अनुवाद में समांतर कोश का महत्व स्वयंसिद्ध है। इस प्रकार के कोश के महत्व को उदाहरण के द्वारा समझा जा सकता है। मान लीजिए अनुवाद–कार्य करने के दौरान स्रोत भाषा पाठ में 'Deceit' (धोखाधड़ी) शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस शब्द विशेष के भिन्न–भिन्न संदर्भों में अलग–अलग अर्थ होते हैं। अगर आप कोई अच्छा शब्दकोश उठाकर उसमें इसका अर्थ देखें तो आपको उसमें अनेक अर्थ मिल जाएँगे, किंतु इसके सटीक प्रतिशब्द का चयन करने में समांतर कोश ज्यादा मददगार सिद्ध होगा। 'Deceit' (धोखाधड़ी) शब्द के अंतर्गत 'scandal' (घपला), 'scam' (घोटाला), 'forgery' (जालसाजी), 'fraud' (धोखाधड़ी), 'cheating' (छल), 'Deceiting' (विश्वासघात करना), 'embezzlement' (गबन), 'misappropriation' (दुरुपयोग) आदि विभिन्न अर्थछटाएँ और प्रतिशब्द निहित हैं। ऐसे में अनुवादक मूल के भाव–कथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रतिशब्द चुनकर लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर देगा।

9.8.6 पर्याय–विपर्याय कोश

'पर्याय कोश' शब्दों के विभिन्न पर्यायों अथवा समानार्थक शब्दों के स्रोत सिद्ध होते हैं। वैसे तो यह माना जाता है कि प्रत्येक शब्द स्वयं में विशिष्ट होता है अर्थात शब्दों के पर्याय नहीं होते हैं क्योंकि कोई भी दो शब्द एक ही अर्थ के द्योतक नहीं होते हैं; उनके गुण–धर्म में कहीं न कहीं और कोई न कोई अंतर अवश्य होता है। वहीं, यह भी स्वीकार किया जाता है कि सामान्य अर्थ के धरातल पर शब्दों में समानता भले ही हो, किंतु सूक्ष्म अर्थ अथवा वर्णन के स्तर पर इनमें अंतर व्याप्त होता है। उदाहरण के लिए, 'मुरलीधर' और 'गिरधारी' भगवान श्री कृष्ण के ही दो नाम हैं, किंतु वर्णन के परिप्रेक्ष्य में दोनों में अंतर है। जैसे, 'मुरलीधर' रासबिहारी का संदर्भ गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाली 'गिरिधारी' कृष्ण के प्रसंग से भिन्न है। परिस्थिति और प्रसंग भले ही उन्हें अलग–अलग स्वरूप प्रदान कर देते हैं, किंतु दोनों का सामान्य अर्थ–संदर्भ

एक ही है। इसी तरह से 'सूर्य' के पर्याय माने जाने वाले 'दिवाकर' और 'प्रभाकर' शब्दों को भी देखा जा सकता है। 'दिवाकर' शब्द 'दिन करने वाला' अर्थ को व्यंजित करता है और 'प्रभाकर' शब्द 'प्रकाश करने वाला' अर्थ को व्यक्त करने वाला है। साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद के समय अनुवादक मूल के शिल्प सौंदर्य विधान के साथ–साथ अर्थ संबंधी सूक्ष्मता को भी ध्यान में रखता है। इन पक्षों को अनूदित पाठ में बनाए रखने के लिए अनुवादक प्रसंग सापेक्ष शब्द रूप का चयन करता है।

जहाँ तक विपर्याय कोश का संबंध है, जिस कोश में कोशकार शामिल किए गए शब्दों के अर्थ, व्याकरणिक कोटि, संकेत, भाषावैज्ञानिक विश्लेषण के स्थान पर मात्र शब्दों का विपरीत प्रतिशब्द ही देता है, वे 'विपर्याय कोश' कहलाते हैं। इन्हें 'विलोम' भी कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि कोश में स्थान प्राप्त शब्दों के केवल एक विलोम ही होते हैं। कुछ ऐसे शब्द भी मिलते हैं जिनके एक से अधिक विलोम देखे जा सकते हैं। 'विपर्याय कोश' में शब्द को वर्णक्रम में ही संकलित किया जाता है और कोशकार प्रत्येक शब्द के विपरीत रूप को प्रविष्टि में शामिल करता चलता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भाषिक क्षमता बढ़ाने एवं शब्द–संपदा की समृद्धि दर्शाने की दृष्टि से विलोम कोशों की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका एवं स्थान है। किंतु, हम इसे भी नजरअंदाज नहीं कर सकते कि विलोम शब्द की जानकारी कम संदर्भों में ही उपयोगी होती है। वैसे भी, ज्यादातर सामान्य कोशों में और पर्यायवाची कोशों में भी शब्द–विशेष के विलोम रूपों को भी शामिल किया हुआ होता है। इसीलिए, पृथक विलोम कोश कम ही निर्मित किए गए हैं।

यहाँ प्रश्न यह उठ सकता है कि विलोम कोश की अनुवाद में क्या सार्थकता है। वास्तविकता यह है कि अनुवाद संबंधी गतिविधि को भली प्रकार से संपन्न करने की प्रक्रिया में अनेक स्थितियाँ ऐसी भी बन जाती है जिनमें विलोम कोश भी सहायक सिद्ध होते हैं। विलोम कोश से किसी खास प्रसंग में अनुवादक को उपयुक्त शब्द का सुझाव मिल जाता है।

'निघंटु', 'अमरकोश' आदि पर्याय कोश ही हैं। अंग्रेजी में 'Webster's Dictionary of Synonyms' तथा हिंदी में श्री गोविंद चातक का 'बृहत् हिंदी पर्यायवाची कोश' (तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 1985) उल्लेखनीय पर्याय कोश हैं। इसी संदर्भ में डॉ. बदरीनाथ कपूर द्वारा संपादित 'नूतन पर्यायवाची एवं विपर्यय कोश' का भी उल्लेख किया जा सकता है।

9.8.6 व्यवहार कोश और अध्येता कोश

भाषा में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्दों के अर्थों के बारे में विभिन्न जानकारियाँ हमें 'कोश' की सहायता से मिलती है। लेकिन, इन अर्थों को कोशों के अलावा 'व्यवहार' अथवा 'प्रयोग' के जरिए भी जानने का एक उपयोगी तरीका है क्योंकि भाषा व्यवहार की प्रक्रिया के दौरान शब्दों को नए–नए संदर्भों के अनुरूप प्रयोग में लाया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि भाषा में नए–नए शब्द, पदबंध और मुहावरे आदि अस्तित्व में आते चलते हैं और स्थान बनाते चलते हैं। वैसे, यह जरूरी नहीं है कि इस प्रकार के शब्द, व्याकरण की कसौटी पर परखे हुए हों या प्रामाणिक हों। किंतु भाषा–व्यवहार में नवीन संदर्भों में नए प्रयोगों के रूप में मान्य हो जाते हैं। शब्दों के इस प्रकार के प्रयोगों से भाषा का स्वाभाविक रूप से विकास होता चलता है। इन नए अर्थों, संदर्भों या प्रयोगों को जानने के लिए सामान्य कोशों पर नजर दौड़ाई जाए तो वे आम तौर पर उपलब्ध नहीं हो पाते हैं।

भाषा में इस प्रकार की कमी को पूरी करने के लिए 'व्यवहार कोश' (Usage Dictionary) तैयार किए जाते हैं। इस प्रकार के कोश में शामिल शब्दों के अर्थ को व्यक्त करने के लिए परंपरागत पद्धति का अनुसरण नहीं किया जाता। इसके स्थान पर 'व्यवहार कोश' में शब्दार्थ को प्रयोगों के जरिए व्यक्त और स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। 'व्यवहार कोश' में बहुअर्थक शब्दों के अर्थों को प्रयोग की दृष्टि से व्यवस्थित किया जाता है। इस क्रम में जो अर्थ सरल होते हैं और सर्वाधिक व्यवहार में लाए जाते हैं, उन्हें सबसे पहले दिया जाता है और अन्य अर्थों को उसके बाद।

'व्यवहार कोश' प्रमाणित करता है कि शब्द के अर्थ का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है क्योंकि अलग–अलग स्थितियों के संदर्भ में अर्थ की छटाओं में भिन्नता पाई जाती है। उदाहरण के लिए, 'दौरा' शब्द को देखा जा सकता है, जो अलग–अलग स्थितियों में भिन्न अर्थ को व्यक्त करता है। जैसे, 'दौरा' (tour), 'दिल का दौरा' (heart attack), 'मिर्गी का दौरा' (epilepic fits) आदि में 'दौरा' शब्द में निहित अर्थ–भिन्नताएँ। इस तरह यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक शब्द की अर्थ–छटाओं को सामान्य कोशों की तुलना में उपयुक्त वाक्य–प्रयोगों के जरिए समझना और समझाना आसान होता है। जब कोश निर्माण करके शब्द की विभिन्न अर्थछटाओं की जानकारी को उपयुक्त वाक्य प्रयोगों के जरिए उद्घाटित किया जाता है तो वह 'व्यवहार कोश' (Dictionary of Usages) कहलाता है। इस प्रकार के कोश को 'प्रयोग कोश' भी कहा जाता है।

'व्यवहार कोश' में शामिल वाक्यों, पंक्तियों अथवा उद्धरणों के रूप में उदाहरण देते हुए शब्दों के भिन्न–भिन्न अर्थों एवं उपयोगों को व्यक्त किया होता है। जैसे, 'काम' शब्द को 'कार्य', 'गरज', 'विषय–वासना', 'जरूरत/आवश्यकता' और 'नौकरी/रोजगार' के अर्थ को उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं में से चुनकर विभिन्न वाक्यों या उद्धरणों के जरिए व्यंजित करना। 'व्यवहार कोश' निर्धारित रूढ़ अर्थ से भिन्न या लीक से हटकर व्यक्त अर्थ को जानने का माध्यम भी भी बनता है। जैसे, 'प्रसंग' शब्द का आम तौर पर 'संबद्ध विषय', 'चर्चा', 'जिक्र' अथवा 'सहवास' होता है। लेकिन, व्यवहार कोश देखने पर पता चलेगा कि इसे 'मौका' अथवा 'अवसर' के अर्थ–संदर्भ में भी प्रयुक्त किया जाता है। हिंदी के प्रतिष्ठित उपन्यासकार अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यास 'सुहाग के नूपुर' में इसी अर्थ में 'प्रसंग' शब्द का प्रयोग करते हुए लिखा है – 'ब्याज का फैलाव घटता–बढ़ता और लुटता भी रहता है। प्रसंग आने पर बुद्धिमान उसकी चिंता छोड़ देते हैं।' (पृ.84) 'व्यवहार शब्दकोश' व्याकरण, वाक्य–विन्यास, शैली, मुहावरे और शब्दों के नए संदर्भों के अनुरूप नए उपयोग से संबंधित है। वाक्य–प्रयोग वाले कोश से भाषा के प्रयोक्ता अथवा अध्येता (learner) को शब्द विशेष के अर्थों की विविधतापूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है और उसे उस शब्द का सही–सही प्रयोग करना आ जाता है। हिंदी भाषा में डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं महेंद्र चतुर्वेदी और ओमप्रकाश गाबा द्वारा संपादित 'व्यावहारिक हिंदी कोश' विशेष तौर पर उल्लेखनीय है।

'व्यवहार कोश' का ही विकास हमें 'अध्येता कोश' (Learners' Dictionary) के रूप में नजर आता है। अध्येता कोश को 'शिक्षार्थी कोश' भी कहा जाता है। व्यवहार कोश की ही भाँति, 'अध्येता कोश' में शामिल शब्दों के अर्थ को प्रयोगों के जरिए स्पष्ट किया है। अध्येता कोश सभी ढंग से शब्दार्थ नहीं देता, मिलते–जुलते शब्दों का अर्थ–भेद भी स्पष्ट करता है। इसके अलावा, इस कोश में संदर्भ के अनुरूप उचित अभिव्यक्तियों के साथ–साथ शब्दार्थ और शब्द रचना को तार्किक ढंग से प्रस्तुति की गई होती है। इस

तरह, भाषा–प्रयोक्ता को शब्द विशेष के सटीक प्रयोग संदर्भ की प्रामाणिक जानकारी मिल जाती है। यह एक विशेष प्रकार का कोश है जिसका महत्व और उपयोग बढ़ता जा रहा है। स्थिति यह बनती जा रही है कि कोश निर्माण की दृष्टि से यह प्रयोजनपरक कोशों के निर्माण का मानदंड बन गया है। कोश के प्रयोजनपरक निर्माण की आधार दृष्टि के कारण हमें दो प्रकार के अध्येता कोश नजर आते हैं – (1) सामान्य शिक्षार्थी कोश; और (2) विशिष्ट शिक्षार्थी कोश। सामान्य कोश में सभी प्रकार के शब्दों को दिया जाता है, जबकि विशिष्ट शिक्षार्थी कोश किसी एक प्रकार के शब्दों को दिया जाता है। जैसे, क्रिया पदों का कोश।

अंग्रेजी का 'Oxford Advanced Learners' Dictionary' सबसे अधिक प्रचलित और प्रामाणिक कोश माना जाता है। ऑक्सफ़ोर्ड उच्च अध्येता कोश की तर्ज़ पर प्रो. वी. रा. जगन्नाथन ने हिंदी में 'छात्रकोश' तैयार किया है। उल्लेखनीय है कि यह कोश कंप्यूटर के सॉफ्टवेयर की भाँति उपलब्ध है। इससे इस कोश की उपयोगिता बढ़ गई है। कंप्यूटर के सॉफ्टवेयर की भाँति होने का अर्थ है कि यह अभिलक्षणों से भरा वह कोश है जिसका उपयोग हर स्तर का व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार कर सकता है। प्रयोगों के साथ शब्द की निर्मित और भाषा की बारीकियों से अवगत कराने वाला यह कोश, हिंदी का पहला अध्येता–कोश है जो हिंदी के अध्यापक, अनुवादक, लेखक सभी के लिए उपयोगी है।

भाषा के प्रति जागरूक पाठकों, लेखकों, पत्रकारों, अध्यापकों, विद्यार्थियों के लिए यह कोश उपयोग सिद्ध होता है। इसके अलावा, भाषा शिक्षण–प्रशिक्षण और अनुवाद में भी यह उपयोगी है। 'व्यवहार कोश' अथवा 'अध्येता कोश' को अगर दो भाषाओं के संदर्भ में तैयार किया गया हो तो अर्थ–भिन्नता को व्यक्त करने वाली अभिव्यक्तियों को सरलता से समझ पाना संभव हो जाता है। इस दृष्टि से अनुवादक के लिए इन कोशों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

9.8.7 व्युत्पत्ति कोश

शब्दों की व्युत्पत्ति से संबंधित जानकारी देने वाला कोश 'व्युत्पत्ति कोश' कहलाता है। सामान्य कोशों में शब्द की व्युत्पत्ति दी हुई हो सकती है, किंतु 'व्युत्पत्ति कोश' (Etmology Dictionary) में शब्दों का पूर्व–रूप, मूल स्रोत और उनकी व्युत्पत्ति के बारे में तथ्यों का गहन और विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया हुआ होता है। 'व्युत्पत्ति शब्दकोश' हमें बताता है कि कोश में शामिल शब्द किस उपसर्ग, प्रत्यय और धातु से बना है? उनका उद्‌भव कहाँ और कैसे हुआ? उनका स्रोत क्या है? कालक्रम में वे शब्द किस रूप में व्यवहार में लाए जाते रहे हैं? इस तरह, व्युत्पत्ति कोश से हमें भाषा के स्वाभाविक विकास की प्रक्रिया में शब्दों की व्युत्पत्ति और रूप परिवर्तन की जानकारी मिल जाती है।

यहाँ प्रश्न यह उठ सकता है कि अनुवादक को 'व्युत्पत्ति कोश' की आवश्यकता क्यों होती है? वास्तव में अनुवाद कार्य के दौरान अनुवादक को शब्द–विशेष के उत्पत्ति से संबंधित अर्थ को जानने के लिए नवशब्द निर्माण के संदर्भ में–विशेष के मूल शब्द (धातु) रूप संबंधी जानकारी की भी जरूरत पड़ सकती है। धातु संबंधी जानकारी से शब्द के मूल अर्थ (जिसे आंतरिक अर्थ भी कह सकते हैं) का अनुवादक को स्पष्ट रूप से बोध हो जाता है। तब व्युत्पत्ति कोश का उपयोग करना सार्थक होता है। शब्दों के व्याकरणिक रूप और अर्थ के शामिल होने से अनुवादक को शब्द–विशेष के व्युत्पत्तिपरक

एवं अर्थपरक प्रयोजनों का सरलता से बोध हो जाता है। लेखन कर्म करने वालों की दृष्टि से भी 'व्युत्पत्ति कोश' की भी यही उपयोगिता है। कुछ प्रमुख व्युत्पत्ति कोश इस प्रकार हैं :

- A Comparative and Etymological Dictionary of the Nepali Language; Ralf Lilley Turner, London : Trubner & Co. Ltd., 1931
- Oxford Dictionary of English Etymology; C.T. Onian et.al., Oxford : Clarendon Press, 1966.
- An Encyclopaedic Dictionary of Sanskrit on Historical Principles; Ed. A.M. Ghatage, Paona, Deccan College Post-graduate and Research Institute, 1976, Vol.I, Pt. I, 1976, Pt. II., 1977

इस संदर्भ में स्कीट द्वारा संपादित 'अंग्रेजी व्युत्पत्ति कोश', डॉ. नरेश कुमार द्वारा संपादित 'हिंदी व्युत्पत्ति कोश' तथा आचार्य बच्चूलाल अवस्थी द्वारा संपादित 'हिंदी व्युत्पत्ति कोश' (चार भागों में) आदि कुछ विशिष्ट व्युत्पत्ति कोश भी उल्लेखनीय है।

9.8.8 कथा कोश और पुराण/मिथक कोश

पुराण और मिथक कोश में धर्म, अध्यात्म और पौराणिक–सांस्कृतिक जानकारियाँ शामिल की हुई होती हैं। इसी प्रकार, कथा कोश में समाज–संस्कृति विशेष में प्रचलित कथाओं–कहानियों का समावेश होता है। कथा कोश आदि का 'साहित्यानुवाद' और विशेष तौर पर काव्य–साहित्य का किसी अन्य भाषा में अनुवाद किए जाने के संदर्भ में अनिवार्य रूप से प्रयोग किया जाता है। इनकी विशेष तौर पर विषम संस्कृतियों से संबंधित भाषाओं की सामग्री का अनुवाद करते समय विशेष प्रासंगिकता है। इसका मूल कारण यह है कि स्रोत भाषा सामग्री में शामिल अंतर्कथाओं–दंत कथाओं का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय आम तौर पर समांतर उपलब्ध नहीं हो पाता। अगर अनुवादक मूल संदर्भ को स्पष्ट किए बिना ही इन्हें लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर देता है तो उस भाषा के पाठक को उन अंतर्कथाओं–दंत कथाओं आदि का आशय स्पष्ट नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए जरूरी है कि अनुवादक 'कथा कोश' का अनिवार्य रूप से सहारा ले ताकि वह अनूदित पाठ में उस कथा के आशय को पाद–टिप्पणी आदि में स्पष्ट कर सके। यही स्थिति पौराणिक–मिथकीय प्रतीकों के कोशों की भी है। पौराणिक प्रतीकों से संबंधित कोश साहित्यानुवाद और विशेष रूप से काव्यानुवाद के दौरान उपयोगी सिद्ध होते हैं। इस प्रकार के कोश से मिथकों, धर्म–दर्शन संबंधी साहित्य तथा प्राक्–ऐतिहासिक संदर्भों एवं प्रसंगों को समझने और उनका सही रूपांतर करने में मदद मिलती है।

9.8.9 उद्धरण कोश/सूक्ति कोश

अन्य कोशों की तुलना में उद्धरण कोश स्वयं में विशिष्ट कोश होता है। कोशों में आम तौर पर प्रविष्ट शब्दों के अर्थ आदि दिए हुए होते हैं, लेकिन उद्धरण कोश में शब्दार्थ के स्थान पर किसी अवधारणा का बोध कराने वाले शब्द या तत्व विशेष की व्याख्या की जाती है। इस दृष्टि से ये अवधारणापरक कोश हैं। 'उद्धरण कोशों' को 'सूक्ति कोश' भी कहा जाता है।

'सूक्ति कोश' के लिए 'सुभाषित कोश', 'अमर वाणी' आदि शब्द भी प्रयुक्त होते नजर

आते है। सुंदर और प्रभावशाली कथन अथवा उक्ति को "सूक्ति" (Maxim) कहा जाता है। 'कथन' वही सुंदर कहा जा सकता है जो पांडित्य, उच्च आदर्श, तत्व ज्ञान और सुचिंतन के उपदेशमूलक नीति वाक्य रूपी लोक कल्याणकारी तत्वों से युक्त हो। इस आधार पर देखा जाए तो कल्याणकारी सुंदर कथन 'सूक्ति' कहलाती है। उदाहरण के लिए, अज्ञात सूक्ति यह है कि 'नेक बनने में सारी उम्र लग जाती है, बदनाम होने में तो एक दिन भी नहीं लगता।' या फिर गुरु रवींद्रनाथ टैगोर की यह सूक्ति कि 'बालक, समस्त मानव समाज की संपत्ति है।' भाषा में अक्सर सूक्तियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे यह कहना कि 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है'। लोगों को नीतिपूर्ण बातें समझाने और उपदेश देते समय सूक्तियों को व्यवहार में लाया जाता है। इनके प्रयोग से भाषा में चमत्कार पैदा होता है।

उद्धरण अथवा सूक्ति कोशों में शब्दों या अवधारणाओं को अकारादिक्रम में रखा जाता है। इन कोशों की प्रविष्टि के रूप में लिए गए शब्द किसी भी अमूल्य विचार अथवा अवधारणा से संबंधित होते हैं और उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम सिद्ध होते हैं। इन कोशों में देश–विदेश के प्राचीन और अर्वाचीन या फिर अज्ञात प्रतिभाशाली विचारकों–चिंतकों और विद्वानों द्वारा विभिन्न संदर्भों में व्यक्त किए गए अमूल्य विचारों का संकलन कर प्रस्तुत किया हुआ होता है।

सूक्ति कोश दो प्रकार के होते हैं – (1) सामान्य सूक्ति कोश (जिसमें देश–विदेश के विद्वान मनीषियों के विचार संकलित होते हैं।); और (2) व्यक्ति केंद्रित सूक्ति कोश (जैसे, प्रेमचंद के विचार, महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर के विचारों पर निर्मित सूक्ति कोश)। श्री शरण द्वारा संपादित 'प्रेमचंद सुभाषित और सूक्तियाँ' इसी प्रकार का व्यक्ति केंद्रित सूक्ति कोश है, जो भारती भाषा प्रकाशन, दिल्ली से 1975 में प्रकाशित हुआ था। यहाँ उदाहरण के लिए, श्री शरण के कोश में प्रेमचंद के 'सेवासदन' से यह सूक्ति उद्धृत है कि 'मन में जब एक भ्रम का प्रवेश हो जाता है तो उसका निकलना कठिन हो जाता है।'

इस प्रकार के कोशों के बारे में सामान्यतः यह लगता है कि अनुवाद के संदर्भ में इनकी कोई सार्थकता नहीं है। लेकिन, ये कोश भी अनुवाद में कभी–कभी सहायक होते हैं, विशेष तौर पर साहित्यानुवाद के संदर्भ में। जैसे, साहित्यकार की दृष्टि में उस शब्द की व्याख्या देखने के लिए इन कोशों का उपयोग किया जाता है। साहित्यकार की मूल दृष्टि को समझने और स्पष्ट करने में ये कोश सहायक होते हैं। इससे उस साहित्यकार–विशेष की अवधारणा से संबंधित मूल दृष्टि को समझने में मदद मिलती है। अपनी इस समझ के आधार पर अनुवादक अवधारणा को लक्ष्य भाषा में स्पष्ट करने योग्य हो पाता है। इसके अलावा, अगर अन्य विषय–क्षेत्रों आदि से संबंधित अनूद्य सामग्री में भी कोई सूक्ति दी हुई हो तो उसका सूक्ति कोश में अनुवाद खोजा जा सकता है। इससे जहाँ सूक्ति के अनुवाद में एकरूपता आएगी, वहीं अनूदित सामग्री की गुणवत्ता भी बढ़ेगी। उदाहरण के तौर पर हम डॉ. श्याम बहादुर वर्मा और मधु वर्मा के 'विश्व सूक्ति कोश' के पृष्ठ 116 पर दी गई 'इतिहास' से संबंधित निम्नलिखित सूक्तियाँ देख सकते हैं, जिनमें सूक्ति और उनका अनुवाद साथ–साथ दिए हुए हैं :

History is continuity and advance. इतिहास निरंतरता और प्रगति है।

– डॉ. राधाकृष्णन् (दि फ़िलासफ़ी आफ़ सर्वपल्लि राधाकृष्णन्, पृ. 10)

It is the true office of history to represent the events themselves, together with

the counsels, and to leave the observations and conclusions thereupon to the liberty and faculty of every man's judgment. इतिहास का सच्चा कार्य है स्वयं घटनाओं को, परामर्शों के साथ प्रस्तुत करना और उन पर अभिमतों व निष्कर्षों को जन–जन के निर्णय की स्वाधीनता व क्षमता पर छोड़ देना।

– बेकन (एडवांसमेट आफ़ लर्निंग)

The use of history is to give value to the present hour and its duty. इतिहास का प्रयोजन वर्तमान समय और उसके अनुसार कर्तव्य को महत्व देना है।

– एमर्सन (सोसायटी एंड सालीट्यूड, वर्क्स एंड डेज़)

There is properly no history; only biography. – यथार्थ में इतिहास कुछ नहीं है केवल जीवनचरित्र है।

–एमर्सन (एसेज़, 'हिस्ट्री')

History after all is the true poetry.- इतिहास अंततः सच्चा काव्य है।

–बासवेल कृत लाइफ़ आफ़ जानसन

History is the essence of innumerable biographies. इतिहास अगणित जीवनचरितों का सार है। – कार्लाइल (ऑन हिस्ट्री)

History, a distillation of rumour. – इतिहास अर्थात् अफ़वाह का आसव।

–कार्लाइल (दि फ्रेंच रेवोल्यूशन, 1/7/5)

डॉ. श्याम बहादुर वर्मा द्वारा संपादित "बृहत् विश्व सूक्ति कोश" के अलावा डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित "उद्धरण कोश" इसी प्रकार का विशिष्ट कोश है।

9.8.10 उच्चारण कोश

उच्चारण कोश में किसी भाषा विशेष के शब्दों की केवल उच्चारण संबंधी सही–सही जानकारी दी हुई होती है। यह जानकारी आम तौर पर 'अंतरराष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों' (International Phonetic Symbols) की सहायता से दी जाती है। उच्चारण कोश से जहाँ हमें शब्दों के सही–सही उच्चारण का पता चलता है, वहीं व्यक्ति–नामों, वस्तु–नामों और स्थान–नामों आदि के सही–सही उच्चारण का भी पता चलता है। इनके अलावा ग्रंथों और संस्थाओं आदि के नामों को लिप्यंतरित रूप में प्रस्तुत करने के लिए भी इस प्रकार के कोश की जरूरत पड़ती है। मौखिक अनुवाद (अर्थात तत्काल भाषांतरण) में भी सही उच्चारण जानने में यह कोश सहायक रहता है। भाषावैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से भी उच्चारण कोशों का विशेष महत्व है।

उच्चारण कोश एकभाषिक भी हो सकते हैं, द्विभाषिक भी और उससे अधिक भाषिक भी। जब हम उच्चारण कोश के एकभाषिक होने की बात करते हैं तो इसका अर्थ है कि किसी एक भाषा में किसी शब्द विशेष का उच्चारण की जानकारी देने वाला उच्चारण कोश। यही स्थिति द्विभाषिक आदि उच्चारण कोशों की होती है। विशेष तौर पर उल्लेखनीय यह है कि उच्चारण कोशों में भाषा–विशेष के शब्दों के प्रामाणिक उच्चारण के संकेत रहते हैं।

उच्चारण कोशों का स्वतंत्र रूप से तो निर्माण किया ही जाता है, द्विभाषिक सामान्य कोशों में भी शब्दों के उच्चारण की रीति की जानकारी दी हुई हो सकती है। इस संदर्भ में हम उदाहरण के तौर फादर कामिल बुल्के के अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश का उल्लेख किया

जा सकता है। बुल्के के इस कोश में अंग्रेजी के शब्दों की प्रविष्टियों में उनके उच्चारण की भी जानकारी दी हुई होती है। इस कोश से उद्धृत कुछ लिप्यंतरित शब्द इस प्रकार हैं – 'रिडाउन्ड' (redound), 'स्क्यूट' (scute), 'स्कॅल' (scull), 'लिबरेट' (liberate), 'नैरो' (narrow), 'रिसीट' (receipt), 'लैम' (lamb) आदि। किंतु इस प्रकार के सामान्य कोश, नामों के उच्चारण के संदर्भ में सहायक नहीं रहते। यह विशेष तौर पर फ्रांसीसी, जर्मन आदि विदेशी भाषाओं के नामों को लिप्यंतरित करने या उच्चरित करने में तो उच्चारण कोश ही सार्थक रहते हैं। उदाहरण के लिए, 'रोजे' (Roget), 'शेवरले' (Cheverlet) आदि की अंग्रेजी वर्तनी और उसके हिंदी लिप्यंतरण की तुलना करने पर उच्चारण कोशों की महत्ता का बोध अपने आप ही हो जाता है।

अंग्रेजी उच्चारण कोशों में डेनियल जॉन्स (Daniel Jones) के 'Everyman's English Pronouncing Dictionary' कोश का विशेष तौर पर उल्लेख किया जाता है। इसी प्रकार, हिंदी में डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'हिंदी उच्चारण कोश' और श्री कृष्ण कुमार भार्गव द्वारा तैयार किए गए 'हिंदी उच्चारण कोश' की गणना बहुचर्चित उच्चारण कोशों में की जाती है।

अनुवाद में उच्चारण कोश की विशेष उपयोगिता है। अनुवाद के दौरान कई ऐसी स्थितियाँ बन जाती हैं जब अनुवादक को उच्चारण कोश का उपयोग करना पड़ जाता है। उदाहरण के लिए, अनूद्य सामग्री में आए किसी शब्द/पदबंध का लक्ष्य भाषा में समतुल्य अर्थ न देकर केवल उसकी लिपि का अंतरित करने की स्थिति में उच्चारण कोश सहायक सिद्ध होता है। स्रोत भाषा पाठ में आए नाम, वस्तु और जातिवाचक जैसे संज्ञा शब्दों का तो लिप्यंतरण ही किया जाता है, जिनमें उच्चारण कोश सहायक सिद्ध होता है। इसके अलावा, आशु अनुवाद (Interpretation) करने के संदर्भ में भी यह कोश उपयोगी रहता है। उच्चारण कोश के जरिए स्रोत तथा लक्ष्य, दोनों भाषाओं के शब्दों का मानक उच्चारण की जानकारी मिलती है।

9.8.11 लोकोक्ति और मुहावरा कोश

'मुहावरे' के द्वारा भाषा–विशेष के कतिपय विलक्षण अर्थ को उद्घाटित किया जाता है। वह विशिष्ट पद–रचना मुहावरा कहलाती है जिसे गढ़े हुए रूढ़ शब्द–वाक्य/वाक्यांश के रूप में प्रयुक्त करके लाक्षणिक एवं व्यंजनामूलक अर्थ व्यक्त किया जाता है। इनका विस्तार–क्षेत्र अत्यधिक विशाल है। लोक+उक्ति से मिलकर बनाकर शब्द 'लोकोक्ति' अपनी उपयोगिता के कारण लोक में प्रसिद्ध अंततः लोककल्याणकारी उक्ति होती है। स्वतंत्र अर्थ रखने वाली ये उक्तियाँ पूर्ण वाक्य का रूप लिए हुए होती हैं। इनमें लोक का यथार्थ अभिव्यंजित होता है। इन्हें 'कहावतें' भी कहा जाता है। हालाँकि दोनों में मौलिक रूप से कोई अंतर नहीं होता। यही कारण है कि अक्सर मुहावरों को लोकोक्ति और लोकोक्तियों को मुहावरा समझ लिया जाता है। इसीलिए कभी–कभी दोनों में अंतर की रेखा खींचना कठिन होता है। फिर भी इतना तो अवश्य ही है कि लोकोक्तियों की तुलना में मुहावरों का सीमा–विस्तार अधिक होता है। साहित्य में मुहावरों और लोकोक्तियों का अक्सर प्रयोग किया जाता है। इनके प्रयोग से साहित्य में लोकाभिव्यक्ति का सीधापन आ जाता है, साहित्य में प्रयुक्त भाषा में लोकभाषा की मिठास का अनुभव होता है।

साहित्य में इनके प्रयोग के कारण भाषा में मुहावरा और लोकोक्ति कोश तैयार किए जाते हैं। ये स्वतंत्र अस्तित्व वाले भी हो सकते हैं और संयुक्त रूप से निर्मित भी। अर्थात

केवल 'मुहावरा कोश', 'लोकोक्ति कोश' या फिर 'मुहावरा–लोकोक्ति कोश' के रूप में भी। ये एकभाषिक भी हो सकते हैं और द्विभाषिक भी। कहने का अभिप्राय यह है कि ऐसे भी कोश मिलते हैं जिनमें भाषा–विशेष के मुहावरे–लोकोक्तियाँ संकलित किए हुए हों और उसी भाषा में उनके अर्थ भी दिए हुए हों। इस प्रकार के मुहावरा/लोकोक्ति कोश एकभाषी होते हैं। इनके अलावा, ऐसे भी मुहावरा/लोकोक्ति कोश हो सकते हैं जिनमें उनके दूसरी भाषा में अर्थ और अगर समतुल्य मुहावरा–लोकोक्ति हो तो वह भी शामिल किया हुआ हो सकता है।

साहित्य में मुहावरे–लोकोक्तियों की विशेष भूमिका एवं स्थान होने के कारण साहित्यानुवादक के समक्ष इनके अनुवाद की चुनौती उठ खड़ी होती है। इसलिए साहित्यानुवाद के संदर्भ में लोकोक्ति और मुहावरा संबंधी कोशों का उपयोग जरूरी होता है। अनुवाद करते समय अनुवादक से यह अपेक्षा रहती है कि वह स्रोत भाषा सामग्री में प्रयुक्त मुहावरे अथवा लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में समांतर मुहावरे/लोकोक्ति की खोज करे, न कि अनुवाद। उदाहरण के तौर पर, हिंदी और अंग्रेजी में ऐसे अनेक मुहावरे आदि मिलते हैं जो अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से एकसमान हैं। यदि भाषा के स्तर पर उन दोनों में अंतर खोजने का प्रयास किया जाए तो वह लिपि का ही अंतर मिलेगा। निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त मुहावरे और उनके अंग्रेजी अनुवाद इसका प्रमाण हैं :

- 'Two and two make four' : 'दो और दो चार'
- 'after a storm comes calm' : 'तूफान के बाद शांति'
- 'Apple of one's eyes' : 'आँख का तारा'
- 'simple living, high thinking' : 'सादा जीवन, उच्च विचार'
- 'as you sow, so must you reap' : 'जैसा बोओगे वैसा काटोगे'

समांतर मुहावरे–लोकोक्ति खोजने पर भी अगर नहीं मिलते तो फिर उनका अनुवाद करना चाहिए। ऐसे में अनुवादक मुहावरा–लोकोक्ति कोश का सहारा लेता है। अगर ये कोश द्विभाषी हैं तो अनुवादक को बड़ी सुविधा रहती है और अगर ये एकभाषी हैं तो इनकी सहायता से अनुवादक स्रोत भाषा के मुहावरे–लोकोक्ति के अर्थ को भली प्रकार से समझकर लक्ष्य भाषा में समतुल्य मुहावरा–लोकोक्ति खोज सकता है अथवा अनुवाद कर सकता है।

9.8.12 साहित्य कोश

जैसा कि नाम से ही आभास होता है कि 'साहित्य कोश' (Dictionary of Literature), साहित्य और साहित्यकारों से संबंधित कोश है। लेकिन, 'साहित्य कोश' शब्द कहानी, कविता, नाटक आदि विभिन्न विधाओं में सृजन कर्म (साहित्य) और सृजनकर्मियों (साहित्यकारों) से जुड़े अर्थ का व्यंजक है। इसमें भाषा विशेष की साहित्यिक पारिभाषिक शब्दावली और उनमें निहित साहित्यिक अवधारणा आदि दी हुई होती है। यह विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों, धाराओं और साहित्यिक रचनाओं की जानकारी का भी स्रोत–आधार है। साहित्य कोश इनमें से किसी एक पर भी केंद्रित हो सकता है और समग्रता लिए हुए भी। यह एक भाषा के साहित्य–साहित्यकारों आदि की जानकारी देने वाला भी हो सकता है और उससे अधिक भाषाओं के साहित्य एवं साहित्यकारों आदि से संबंधित भी।

रचना (पुस्तक) केंद्रित साहित्य कोश के रूप में हम मध्यकालीन रामभक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास की 'विनय पत्रिका' के शब्दों के आधार पर महावीर प्रसाद मालवीय द्वारा निर्मित 'विनय कोश' या फिर केदारनाथ भट्ट द्वारा 'मानस' के शब्दों के आधार पर निर्मित 'रामायण कोश' के रूप में 'पुस्तक कोश' का उल्लेख कर सकते हैं। इसके अलावा, साहित्यकार केंद्रित कोशों के रूप में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त शब्दों का 'तुलसी शब्द सागर' (संग्रह – हरिगोविंद तिवारी, संपादन – डॉ. भोलानाथ तिवारी), सूरदास के शब्दों (तथा ब्रजभाषा के अन्य शब्दों का भी) का 'ब्रजभाषा सूर कोश' (प्रेमनारायण टंडन), शशिप्रभा का 'मीरां कोश', आ. परशुराम चतुर्वेदी और महेंद्र का 'कबीर कोश' आदि मिलते हैं। इसी प्रकार, काव्य या गद्य की विभिन्न साहित्यिक धाराओं के आधार पर निर्मित कोश भी हो सकते हैं। जैसे 'संत काव्यधारा कोश', 'राम काव्यधारा कोश', 'छायावादी कोश' आदि।

भाषा कर्म से जुड़े व्यक्तियों के लिए 'साहित्य कोश' विशेष तौर पर उपयोगी है। किंतु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अनुवादक के लिए इसका कोई महत्व नहीं है। साहित्य से संबंधित विषयों की सामग्री के अनुवाद के संदर्भ में इसकी उपयोगिता है। अगर अनुवादक को साहित्यिक अवधारणा स्पष्ट नहीं होगी तो वह गलत अनुवाद कर सकता है। साहित्य संबंधी स्रोत भाषा के किसी शब्द विशेष के लिए अनुवादक को लक्ष्य भाषा में उपयुक्त प्रतिशब्द नहीं मिलने की स्थिति में उसे नया शब्द तक गढ़ना पड़ सकता है। अनुवादक के समक्ष इस तरह की स्थिति, विशेष तौर पर नई अवधारणाओं के संदर्भ में बनती है। तब भी साहित्य कोश, अनुवादक के लिए सहायक सिद्ध होते हैं।

9.8.13 विश्व कोश

'साहित्य कोश' के समान, विश्वकोश (Encyclopaedia) भी देखने को मिलता है। आम तौर पर, कोशों के संदर्भ में उल्लिखित किए जाने वाले 'विश्वकोश' का अर्थ है –'विश्व का कोश'। विश्व का यह कोश वास्तव में 'विश्व के ज्ञान का कोश' है। अर्थात इसका संबंध ज्ञान–विज्ञान से है। विश्वकोश में विश्व के समस्त विषयों–उपविषयों से संबंधित सभी प्रविष्टियाँ समाहित की हुई होती हैं। इसमें विभिन्न विषयों एवं ज्ञान–विज्ञान की समस्त शाखाओं की जानकारी को प्रस्तुत किया हुआ होता है। इस जानकारी को विश्वकोश में वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया हुआ होता है। ज्ञान–विज्ञान की शाखाओं–प्रशाखाओं के आधार पर विश्वकोशों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है – (1) सामान्य विश्वकोश; और (2) किसी एक विषय विशेष से संबंधित विश्वकोश। सामान्य विश्वकोश में सभी विषय एक साथ समाहित किए हुए होते हैं। अंग्रेजी का 'एनसाइक्लोफीडिया ब्रिटेनिका' तथा हिंदी का 'हिंदी विश्व कोश' आदि इसी प्रकार के सामान्य विश्वकोश हैं। जबकि 'सामाजिक विज्ञान विश्वकोश', 'पर्यावरण विश्वकोश', 'विज्ञान विश्वकोश' आदि किसी एक विषय विशेष से संबंधित विश्वकोश हैं।

'साहित्य कोश' के समान, विश्वकोश (Encyclopaedia) का भी अनुवाद से सीधा संबंध नहीं है। किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि विश्वकोश की भी अनुवाद में कोई भूमिका नहीं है। वस्तुतः अनुवाद की दृष्टि से विश्वकोश की सीमित संदर्भ में ही उपयोगिता है। किसी विशिष्ट शब्द विधान की खोज करने के संदर्भ में विश्वकोश का कभी–कभी उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा, ज्ञानवर्धन की दृष्टि से भी विश्वकोश की महत्ता असंदिग्ध है।

9.8.14 कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश

'कंप्यूटर कोश' शब्द का इस्तेमाल करते ही हमें यह लग सकता है कि यह कंप्यूटर से संबंधित पारिभाषिक शब्दों के संकलित रूप लिए हुए है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने 'कंप्यूटर कोश' प्रकाशित किया भी हुआ है। लेकिन यहाँ हम जिस संदर्भ में 'कंप्यूटर कोश' पर विचार कर रहे हैं, उसका संबंध इलेक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध कोश से है, जिसके जरिए उसमें प्रविष्टि शब्दों आदि के बारे में विभिन्न प्रकार जानकारी मिलती है। इलेक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध होने के कारण इन्हें 'इलेक्ट्रॉनिक कोश' भी कहा जा सकता है।

कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश मूलतः एक ही प्रकार के कोश हैं, जो हमें डिजिटल अथवा इलेक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध होते हैं। अंतर केवल उपलब्धता के तरीके का है। कंप्यूटर कोश सॉफ्टवेयर के रूप में हमारे डेस्कटॉप पर विद्यमान रहता है और ऑनलाइन कोश इंटरनेट द्वारा प्रदत्त सुविधा के आधार पर उपलब्ध होता है। इसलिए अनुवाद की उपयोगिता के संदर्भ में इन पर अलग–अलग विचार न करके एक साथ और पर्याय के रूप में विचार किया जा रहा है।

कंप्यूटर और ऑनलाइन कोश भी मुद्रित कोशों की भाँति ही हैं। लेकिन, उनकी उपादेयता पर विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि मानव अनुवादक को इससे शब्दों के अर्थ–पर्यायों आदि तक शीघ्रता से पहुँचने में मदद मिलती है। भारी–भरकम अथवा कई–कई खंडों में प्रकाशित मुद्रित शब्दकोशों में किसी शब्द–विशेष के पर्याय की तलाश करने में अनुवादक को अपेक्षाकृत काफी अधिक समय लगता है, जबकि कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश इस कार्य को पलन झपकते ही संपन्न कर देता है। इसके अलावा, कंप्यूटर द्वारा अनुवाद (यानी मशीनी/कंप्यूटर अनुवाद) में भी ये कोश महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होते हैं। अनुवाद के क्षेत्र में कंप्यूटर क्रांतिकारी भूमिका निभा रहा है। इसने कंप्यूटर द्वारा अनुवाद करना संभव किया है। कंप्यूटर का यह प्रयास कंप्यूटर शब्दकोश आदि के बिना मूर्त नहीं होता। इनका उपयोग करते हुए कंप्यूटर शब्दकोश सॉफ्टवेयर भी तैयार किए गए हैं और किए जा रहे हैं।

कंप्यूटर कोश का इस्तेमाल मशीनी अनुवाद में होता है। कंप्यूटर के जरिए अनुवाद कराने की जरूरत ने इलेक्ट्रॉनिक कोश और संबंधित सॉफ्टवेयर तैयार करने को दिशा प्रदान की। लेकिन, वस्तुस्थिति यह है कि कंप्यूटर साधित अनुवाद के लिए संबद्ध कोशों के निर्माण और अनुप्रयोग की दिशा में अभी बहुत अधिक गंभीर प्रयास करने की जरूरत है। यह सार्थक तरीके से तभी संभव हो पाएगा जब भाषाविद और कंप्यूटर तकनीकविद इस दिशा में गंभीर प्रयास करें। इसमें कोई संदेह नहीं कि कंप्यूटर कोश और कंप्यूटर अनुवाद जैसे प्रयास, भाषा और अनुवाद के क्षेत्र में एक अच्छी शुरुआत हैं। शीघ्र संदर्भ और उपयुक्त पर्याय चयन की दृष्टि से इसका अनुप्रयोग लाभदायक है, लेकिन वाक्य या प्रोक्ति के स्तर पर अपेक्षित सफलता संदिग्ध बनी हुई है। किंतु इसके उज्ज्वल भविष्य को लेकर कोई संदेह नहीं है। इस प्रकार के कोशों की उपलब्धता के लिए कंप्यूटर, इंटरनेट कनेक्शन, बिजली की निर्बाध आपूर्ति आदि जैसी आधारभूत संरचना की जरूरत होती है।

9.9 अनुवाद में कोशों के उपयोग की सीमाएँ

अब तक किए गए अध्ययन से आपको अनुवाद और कोशों का संबंध स्पष्ट हो चुका होगा। आप यह भी जान चुके हैं कि अनुवाद में कोशों का क्या महत्व है। इस महत्व को और स्पष्ट करने के लिए हम अनुवाद के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के कोशों की उपयोगिता पर भी विचार कर चुके हैं। हमें अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि अनुवाद में कोशों की उपयोगिता और भूमिका अपरिहार्य है। इकाई के इस भाग में हम यह बताना चाहते हैं कि इस अपरिहार्यता के बावजूद कोशों के उपयोग की कतिपय सीमाएँ भी हैं।

अनुवाद में कोशों के उपयोग की सीमाओं का मूल कारण यह है कि हम सभी किसी न किसी भाषा का व्यवहार करते हैं। प्रत्येक भाषा, अपने भाषा–समाज की संस्कृति को अपने में समेटे रहती है। यही नहीं, साहित्य में भाषा का रागात्मक प्रयोग होता है। भाषा के इस रागात्मक प्रयोग के कारण कभी–कभी एक ही शब्दबंध या पदबंध के एक ही साथ एकाधिक अर्थ व्यंजित होते हैं।

सम् (उत्तम)+कृति (अभिव्यक्तियाँ / चेष्टाएँ) से मिलकर बने "संस्कृति" वे उत्तम अभिव्यक्तियाँ हैं जिनके द्वारा मानवता को सतत भौतिक (खान–खान, रहन–सहन, वेशभूषा आदि), आधिभौतिक (रीति–रिवाज, विचार दृष्टि, परंपराएँ, मूल्य, मान्यताएँ आदि) और आध्यात्मिक विशिष्टता प्राप्त होती है। संस्कृति से जुड़ी ये भौतिक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक अभिव्यक्तियाँ या तत्व भाषा–विशेष में रचित किसी भी रचना में उपस्थित रहते हैं। यह बात अलग है कि किसी रचना में ये तत्व कम हों अथवा अधिक, लेकिन इनकी उपस्थिति बनी रहती है। ये तत्व मिथकीय सादृश्य, सामाजिक परंपराएँ, ऐतिहासिक प्रसंग, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक संदर्भ, लोक–व्यवहृत विश्वास, रीति–रिवाज, रहन–सहन, वेशभूषा, खानपान आदि जैसे विभिन्न रूपों में बने रहते हैं। लेकिन ध्यान देने योग्य है कि सभी भाषा–समाजों में इस प्रकार के सांस्कृतिक तत्व समान रूप से विद्यमान नहीं होते, परस्पर भिन्न होते हैं।

मूल भाषा पाठ में उस भाषा–संस्कृति के सांस्कृतिक तत्व विभिन्न प्रकार से प्रतिध्वनित होते हैं। ये तत्व धार्मिक विश्वास, आस्थाएँ, परंपराएँ, दार्शनिक विचार आदि आधिभौतिक रूप से भी जुड़े होते हैं; और साथ ही रहन–सहन, खान–पान, तीन–ज्यौहार, रीति–रिवाज, रिश्ते–नाते आदि जैसे भौतिक रूप वाले भी होते हैं और आध्यात्मिक भी। इन्हें "सांस्कृतिक शब्द" कहा जाता है। इसके अलावा, इनके लिए पर्याय के रूप में "सांस्कृतिक संदर्भ", "सांस्कृतिक तत्व" शब्द भी प्रयुक्त कर लिया जाता है। ये तत्व सांस्कृतिक नामों, सांस्कृतिक घटनाओं, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और सांस्कृतिक शीर्षकों आदि से जुड़े होते हैं। जैसे, सांस्कृतिक नामों के अंतर्गत व्यक्ति अथवा पात्रों के नाम, खाने–पीने की वस्तुओं, भौगोलिक परिस्थितियों, पर्वोत्सवों, दैनिक प्रयोग की वस्तुओं के नाम शामिल किए जा सकते हैं। "राम", "कृष्ण", "कंस", "नानक", "बुद्ध", "हिटलर" आदि व्यक्ति नाम हों या "पापड़", "ढोकला", "डोसा", "संदेश", "जलेबी" जैसी खाने–पीने की वस्तुओं के नाम; "होली", "दीपावली", "क्रिसमस", "ईद", "तीज" आदि पर्वोत्सवों के नाम; "हुक्का", "तंदूर", "चिलम", "साड़ी", "धोती–कुर्ता", "खड़ाऊँ" आदि दैनिक प्रयोग की वस्तुओं के नाम और "चित्रकूट", "वेटिकन सिटी", "मक्का–मदीना", "येरूशलम", "गोवर्धन" आदि भौगोलिक स्थितियों–स्थानों के नाम केवल शब्द मात्र नहीं हैं। इनके साथ भाषा–संस्कृति विशेष के अनेक सांस्कृतिक संदर्भ–प्रसंग जुड़े हुए होते हैं। "द्रौपदी चीरहरण", "भरत

मिलाप", "अहिल्या उद्धार", "ईसा को सूली पर चढ़ाया जाना" आदि सांस्कृतिक घटनाओं के व्यंजक हैं। "गोदान", "राम की शक्ति पूजा" या "कामायनी" के "श्रद्धा", "इड़ा", "मनु", "चिंता" आदि शीर्षक सांस्कृतिक प्रसंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। "कन्यादान", "हाथ पीले करना", "श्राद्ध कर्म", "भात देना/भात खिलाना", "घुड़चड़ी", "भाँवरे", "चक्रव्यूह", "संजीवनी बूटी", "महाभारत का युद्ध", "क्रिया कर्म", "सिंदूर मिटना" आदि इसी प्रकार के सांस्कृतिकता से जुड़े शब्द हैं। मामा–मामी, मौसा–मौसी, बुआ–फूफा आदि जैसे रिश्ते–नाते की शब्दावली और 'लाल' 'पीला' 'हरा', 'नारंगी' आदि रंगों की शब्दावली केवल भाषा के जरिए व्यक्त किए जाने वाले अर्थ के व्यंजक शब्द नहीं हैं; ये वस्तुतः सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों से जुड़े शब्द हैं।

अनुवाद के दौरान स्रोत भाषा के कथ्य का लक्ष्य भाषा में भाषांतरण के साथ–साथ सांस्कृतिक अंतरण भी होता है। जैसे, यदि हम शेक्सपियर के नाटक का हिंदी में अनुवाद केवल भाषांतरण मात्र नहीं हैं, वह यूरोपीय संस्कृति का भारतीय संस्कृति में अंतरण भी है क्योंकि अनूदित नाटक में कथोपकथन लक्ष्य भाषा हिंदी की संवेदना के जरिए अभिव्यक्ति पा रहे होते हैं। मूल लेखक (अर्थात शेक्सपियर) ने भले ही उन्हें अंग्रेजी–भाषी दर्शकों की सोच, समझ और संवेदना को ध्यान में रखकर लिखा था, लेकिन अनुवादक लक्ष्य भाषा (हिंदी) के पाठक वर्ग की सोच, समझ और संवेदना को ध्यान में रखकर उसका अनुवाद कर्म करता है। संस्कृति का यह संवहण हिंदी, बांग्ला, मराठी जैसे नजदीकी से जुड़े भाषा–युग्मों पर भी लागू हो सकता है और चीनी–हिंदी, फ्रांसीसी–मराठी, जापानी–बांग्ला जैसी दूरस्थ सांस्कृतिक संबंध वाली भाषाओं पर भी। अनुवाद को सांस्कृतिक आदान–प्रदान का आधार मानने के कारण ही अनुवादक को 'सांस्कृतिक दूत' की संज्ञा तक दे दी जाती है।

अनुवाद के दौरान ऐसी स्थितियाँ भी बन जाती हैं जब स्रोत भाषा पाठ के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ लक्ष्य भाषा समाज और संस्कृति में मौजूद नहीं होते या फिर लक्ष्य भाषा में उससे बिलकुल भिन्न संदर्भ और स्थितियाँ होती हैं। अनुवादक को इन स्थितियों का सामना करते हुए लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करना होता है। यह एक श्रम–साध्य एवं चुनौतीपूर्ण कार्य होता है क्योंकि अनुवाद की भाषापरक सीमाएँ तो दोनों भाषाओं (स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा) की भिन्न भाषिक संरचना के कारण उठ सकती हैं, किंतु इन संदर्भों का अंतरण बड़ा जटिल कार्य माना जाता है। इस संदर्भ में अनुवाद में कोश एक सीमा तक ही सहायक हो पाते हैं।

कोश की सीमाएँ ज्ञान का संदर्भ लिए हुए भी हैं। हम जानते हैं कि ज्ञान–राशि का संचित कोश 'साहित्य' कहलाता है और इसे मोटे तौर पर दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। इनमें से कहानी–कविता आदि सर्जनात्मक साहित्य वास्तव में 'आनंद का साहित्य' है और अन्य सभी प्रकार का साहित्य 'ज्ञानात्मक साहित्य' है। सर्जनात्मक साहित्य में लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति की भाषा प्रयुक्त होती है, जिस कारण अनुवादक के सामने भाषा, समाज और संस्कृति से संबंधित चुनौतियाँ उठ खड़ी होती हैं। इनका सामना करने में अनुवादक कोशों का सहारा लेता है, लेकिन उनकी सीमा में अनुवादक को असहाय बना देती है।

वहीं दूसरी ओर, ज्ञानात्मक साहित्य की अभिधापरक अनूद्य सामग्री को सहज तो बना देती है, लेकिन अनुवादक से विषय–विशेष और उसकी पारिभाषिक शब्दावली के बोध की अपेक्षा को एक हद तक अनिवार्यता की स्थिति तक ला देती है। ज्ञान–विज्ञान और

सूचना प्रधान साहित्य के अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की समस्या से निपटने के लिए अनुवादक को विशेष प्रयास करने पड़ते हैं। पारिभाषिक शब्दावली की अवधारण ा और आयामों के संबंध में आप इस पाठ्यक्रम के अगले खंड में विस्तार से अध्ययन करेंगे, किंतु यहाँ हम अनुवाद में कोशों के उपयोग की सीमाओं के संदर्भ में बताना चाहते हैं कि पारिभाषिक शब्द अनुवाद में कैसे समस्या खड़ी करते हैं। खंड 4 की इकाई 14 में आपको यह जानकारी दी जाएगी कि भाषा में शब्दों के प्रयोग की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं– (1) सामान्य शब्द, (2) अर्ध–पारिभाषिक शब्द; और (3) पारिभाषिक शब्द। अनुवादक, सामान्य शब्दों का अनुवाद करते समय आम तौर पर स्रोत और लक्ष्य भाषा से संबंधित द्विभाषिक कोशों का उपयोग करता है, लेकिन, अर्ध–पारिभाषिक और पारिभाषिक शब्द उसके चुनौती बनकर सामने आ सकते हैं। इन चुनौतियों का अनुवादक को किस तरह से समाधान करना चाहिए – इनके बारे में आप इकाई 15 में विस्तार से और पर्याप्त उदाहरणों के साथ जानकारी हासिल करेंगे। यहाँ सिर्फ इतना उल्लेख करना ही काफी होगा कि अनुवादक को विषय विशेष से संबंधित पारिभाषिक शब्दावलियों का उपयोग करना चाहिए ताकि उसके द्व ारा किए गए जाने वाला अनुवाद अपने स्वरूप मानक हो। विषय–विशेष की शब्दावली के प्रयोग से अनूदित पाठ प्रामाणिक भी रहेगा। अगर अनुवादक सामान्य कोशों का उपयोग करता है तो हो सकता है कि अर्ध–पारिभाषिक और पारिभाषिक शब्द विशेष का अर्थ उसमें हो, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह विषय–विशेष के संदर्भ में प्रामाणि ाक अर्थ को ही व्यक्त करने वाला हो। वैसे, यहाँ अनुवादक को मूल सामग्री की प्रकृति आदि को ध्यान में रखते हुए अपने विवेक के अनुसार भी पारिभाषिक प्रतिशब्द प्रयोग करना होगा। इस प्रकार की स्थितियों का उल्लेख इकाई 15 में विस्तार से किया गया है। यहाँ सिर्फ इतना कहना ही काफी होगा कि पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में भी कोश की अपनी सीमाएँ हैं।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि कोश अनुवादक के लिए केवल आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य साधन–उपकरण है। लेकिन, कोशों की सीमाएँ होती हैं, विशेष तौर पर संभव नहीं होता है। इसके लिए अनुवादक विभिन्न प्रकार की युक्तियाँ–प्रविधि ायाँ अपनाता है, जिनके बारे में आप इस पाठ्यक्रम की इकाई 2 में विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं।

9.10 सारांश

इस इकाई के अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद के साधनों के रूप में कोश एक महत्वपूर्ण घटक है। ये विभिन्न प्रकार के हैं। लेकिन, इनका महत्व इस दृष्टि से है कि कोशों के ये विभिन्न प्रकार अनुवाद कर्म में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायक ही होते हैं। इस इकाई में अनुवाद के संदर्भ में विविध प्रकार के कोशों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

कोश, भाषा अर्थात् शब्दों के अर्थ, प्रयोग, अभिव्यक्तियों और अवधारणाओं को समझने और सार्थक अर्थ संप्रेशण के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। कोशों की यह उपयोगिता अनुवाद का संदर्भ भी लिए हुए है। अनुवाद के अध्ययन–अध्यापन, प्रशिक्षण और प्रायोगिक कार्य (स्रोत से लक्ष्य भाषा में अनुवाद) के लिए सभी प्रकार के कोश उपादेय होते हैं। अनुवाद

और कोशों के अंतःसंबंध के बारे में जानने से यह पता चलता है कि कोश, अनुवाद की आधारभूत संरचना का एक प्रमुख हिस्सा हैं। अनुवाद करने के दौरान अनुवादक आवश्यक प्रसंग के अनुसार अलग–अलग प्रकार के कोशों का उपयोग करता है। कोश भाषिक भी होते हैं और भाषिकेतर (विषय आदि) से संबद्ध भी। अनुवादक के लिए भाषिक और भाषिकेतर आदि विभिन्न प्रकार के कोश उपयोगी साधन सिद्ध होते हैं। अनुवाद में विषय और प्रसंग की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के कोश समय–समय पर उपयोगी होते हैं। वास्तविकता यह है कि जब अनूद्य विषय से संबंधित विशिष्ट संकल्पनाएँ आदि अनुवादक के लिए अस्पष्ट होती हैं तब उन्हें कोशों की सहायता लेनी होती है। तब विभिन्न प्रकार के कोश उनके सहायक सिद्ध होते हैं। प्रामाणिक अनुवाद के लिए कोशों की उपयोगिता अपरिहार्य है, स्वयंसिद्ध है।

हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि अनुवाद के लिए अपरिहार्य कारक होने के बावजूद सांस्कृतिक तत्वों और ज्ञानात्मक साहित्य की पारिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में कोशों की भी सीमाएँ होती हैं। लेकिन इसके बावजूद, सभी प्रकार के कोशों का अध्ययन अनुवाद में सहायक हो सकता है। वस्तुतः अपनी–अपनी भाषा और अनुवाद अध्ययन–अध्यापन, प्रशिक्षण और प्रायोगिक कार्य के लिए विभिन्न प्रकार के कोशों की उपादेयता के कारण ही हिंदी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं और अन्य यूरोपीय भाषाओं तथा उनकी उपभाषाओं (बोलियों) में अनेक कोशों का निर्माण किया जा चुका है, किया जा रहा है और किया जाता रहेगा। जैसे–जैसे भाषाओं का विकास, परिवर्धन और परिमार्जन होता चला जाएगा, वैसे–वैसे नए–नए कोश अस्तित्व में आते रहेंगे।

9.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) कोश से आप क्या समझते हैं? 'कोश' और 'कोष' में अंतर स्पष्ट करते हुए कोश की आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डालिए।

2) अनुवाद और कोश का अंतःसंबंध स्पष्ट करते हुए अनुवाद में कोशों का महत्व बताइए।

3) अनुवाद में एकभाषिक कोशों की आवश्यकता क्यों पड़ती है? स्पष्ट कीजिए।

4) अनुवाद और पुनरीक्षण में द्विभाषिक कोशों की उपयोगिता को स्पष्ट कीजिए।

5) अनुवाद में कोशों के उपयोग की क्या सीमाएँ हैं?

9.12 उपयोगी पुस्तकें

- सिंह, राम आधार, 1990. कोशविज्ञान : सिद्धांत एवं प्रयोग, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास।
- कत्रे, सुमित्र मंगेश (अनु. शर्मा, सरोजिनी). कोश विज्ञान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

- कुमार, सतीश (सं.). कोश विज्ञान : सिद्धांत एवं मूल्यांकन, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।
- 'गवेषणा' पत्रिका (भारत में कोश विज्ञान पर विशेष). अंक 93, जनवरी–मार्च 2009, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा।
- "अनुवाद" (कोश विशेषांक), भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY